



भारत 2023 INDIA

सर्वोप कल्याणम्

ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

संदेश

(2021-2023)



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (कोयला)

पुराना निज़ाम महल (प्रथम तल),

234/4, ए.जे.सी.बोस रोड, कोलकाता-700020





आज़ादी का
अमृत महोत्सव



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिन्दी पत्रिका

संदेश

वार्षिक पत्रिका

2021-23

अंक: चतुर्थ

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (कोयला)

पुराना निज़ाम महल (प्रथम तल),

234/4, ए.जे.सी.बोस रोड, कोलकाता-700020



समूह कुटुम्बकम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसत्ता संघर्षिका
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकार
महानिदेशक लेखापरीक्षा (कोयला)
पुराना निज़ाम महल
234/4, ए.जे.सी. बोस रोड, कोलकाता-700020
प्रकाशन
'संदेश'
वार्षिक पत्रिका
अंक: चतुर्थ (2021-23)
पत्रिका परिवार
मुख्य संरक्षक
श्री अतुल प्रकाश
प्रधान निदेशक
संरक्षक
श्री कृशल कार्तिक एस
निदेशक
प्रकाशन परामर्शदाता समिति एवं संपादक मण्डल
संपादक
राजीव रंजन - हिन्दी अधिकारी
प्रबंध संपादक
संजीव कुमार सिंह - कनिष्ठ अनुवादक
मुद्रक -
मेसर्स सना खुराना,
170/1, आचार्य जगदीश चंद्र बोस रोड,
कोलकाता-700014
मोबाइल न.: 8240727002; 9339764686

मूल्य -
राजभाषा के प्रति निष्ठा

अनुक्रमणिका

संरक्षक की कलम से...		03
निदेशक की कलम से...		04
संपादकीय		05
मानवाधिकार दिवस	डॉ. सुधा तिवारी	06
मेरे सेवा जीवन की स्मृतियाँ	भूपेन बंदोपाध्याय	09
स्टार्ट अप एवं यूनिर्कोर्न	राजीव रंजन	11
भारत और योग	संजीव कुमार सिंह	13
मणिपूर: खेलों में उभरती		
भारत की शक्ति	रवि प्रभात	18
अजनबी स्थान में एक		
अनोखा सफर	सुस्मिता विश्वास	20
ऑनलाईन कक्षाओं का बच्चों		
के स्वास्थ्य पर प्रभाव	गागी मंडल	22
ऑनलाईन कक्षाओं का बच्चों		
के स्वास्थ्य पर प्रभाव	विकाश कुमार दाँ	24
ऑनलाईन कक्षाओं का बच्चों		
के स्वास्थ्य पर प्रभाव	रवि प्रभात	26
आजादी का अमृत महोत्सव	राय बहादुर सिंह	28
महादेवी वर्मा-		
नारी हृदय की रचनाकार	भावना कुमारी	30
आजादी का अमृत महोत्सव	सुशील कुमार राम	34
कोलकाता: ए सिटी ऑफ जॉय	नुपुर साव	38
मानव जीवन और नैतिक मूल्य	आनन्द कुमार सिंह	41
माँ तुझे सलाम.....	संगीती दोलाई	44
पर्व एक बहाना	प्रकाश राणा	45
भाई भाई	प्रकाश राणा	46
देवराहा बाबा	सुधीर कुमार सिंह	47
द्विभाषी वाक्यांश/शब्दावली		49

उद्घोषणा: सभी रचनाकारों के विचार
निजी हैं एवं कार्यालय/विभाग का इनसे
सहमत होना आवश्यक नहीं है।



भारत गुरुकुलम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसभायः सार्वभौमिका
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव



अतुल प्रकाश
प्रधान निदेशक



संरक्षक की कलम से...

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (कोवला)

पुराना निज़ाम महल (प्रथम तल), 234/4, ए.जे.सी.बोस रोड,
कोलकाता-700020

कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'संदेश' के संयुक्तांक के प्रकाशन पर हर्ष का अनुभव हो रहा है। पत्रिका के प्रकाशन का लक्ष्य राजभाषा के कार्य को बढ़ावा देना है। इस पत्रिका के प्रकाशन में पूरे कार्यालय के विभिन्न भाषा एवं क्षेत्रों से आने वाले कार्मिकों ने अपना योगदान दिया है जिसके लिए सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं।

पत्रिका में कविता, कहानी और आजादी के अमृत महोत्सव और लेखापरीक्षा दिवस पर भी लेख शामिल हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका कार्मिकों में नए उत्साह का सृजन करेगी एवं सभी सुधी पाठकों को भी रुचिपूर्ण लगेगी। कार्यालय में राजभाषा का प्रयोग अधिक से अधिक करने के नवीनतम उपायों को अपनाने की आवश्यकता होगी जिससे राजभाषा विभाग के उद्देश्यों को हम पूरा कर सकें। पत्रिका के संबंध में किसी भी सुझाव एवं टिप्पणी का स्वागत रहेगा।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु बधाई एवं शुभकानाएं !

अतुल प्रकाश
प्रधान निदेशक



भारत 2023
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसर्वसाधक सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव



कुशल कार्तिक एस
निदेशक/मुख्यालय



निदेशक की कलम से...

'संदेश' का चतुर्थ अंक इसके पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। हमेशा की तरह यह मनोरंजक लेखों और रोचक सामग्री के साथ देश-विदेश के अनुभव लेकर आपके समक्ष आ पहुंची है। आशा करता हूँ कि इस पत्रिका की रचनाएँ, लेख एवं कवितायें इस कार्यालय के साथ-साथ विभाग के अन्य कार्यालय के कार्मिकों को भी अपने विचार को संप्रेषित करने की प्रेरणा और प्रोत्साहन देंगी।

संघ सरकार के विभिन्न कार्यालयों द्वारा प्रकाशित हिन्दी की पत्रिकाएँ न सिर्फ राजभाषा हिन्दी के अनुपालन के संवैधानिक और सांविधिक दायित्व का निर्वहन करती हैं बल्कि ये कार्मिकों के अभिव्यक्ति का माध्यम भी हैं और उन्हें अपना विचार और चिंतन साझा करने का एक मंच भी प्रदान करती हैं। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के माध्यम से कार्यालय के सदस्यों का परस्पर अनुभूत सत्य से साक्षात्कार होता है और देश-काल की सीमा से परे हार्दिक जुड़ाव की अनुभूति लोग कर पाते हैं। अतः सभी सदस्यों से अनुरोध है कि पत्रिका के कार्य में आगे बढ़कर हिस्सा लें और अपनी भागीदारी सुनिश्चित करें।

पत्रिका के सफल सम्पादन और आकर्षक डिज़ाइन आदि के लिए संपादक-मंडल के सदस्य और राजभाषा अनुभाग बधाई के पात्र हैं। शुभकामनायें।

कुशल कार्तिक एस
निदेशक/मुख्यालय



भारत 2023
भारत 2023



लोकराज्य सन्धिकषा
Dedicated to Truth in Public Interest



आजादी का
अमृत महोत्सव



राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग

कार्यालय, महानिदेशक लेखापरीक्षा (कोयला) पुराना निज़ाम मज़ल
(प्रथम तल), 234/4, ए.जे.सी.ब्रॉस रोड, कोलकाता-700020

संपादकीय

'संदेश' के चतुर्थ अंक के सम्पादन कार्य ने मुझे अपार हर्ष प्रदान किया है। कोविड 19 और ओमिक्रोन के कारण उत्पन्न स्थिति में भी रचनाकारों ने उत्साह-पूर्वक अपना योगदान दिया है। केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों से प्रकाशित होने वाली राजभाषा हिन्दी की पत्रिका कार्मिकों को अभिव्यक्ति के साथ-साथ यह भी अवसर प्रदान करती है कि भारत के संविधान के प्रावधानों के तहत देवनागरी में लिखी हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत करने की प्रक्रिया को मूर्त रूप दे सकें।

विभाग के सभी कार्मिकगण यथासंभव अपने नियमित कार्य में राजभाषा का प्रयोग करते समय पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग करते हैं जो उनके कार्य-क्षेत्र के अनुरूप होते हैं। ऐसी शब्दावली एक विशेष या विशिष्ट क्षेत्र, विभाग, अनुभाग या स्कन्ध में प्रयोग किए जाते हैं। शब्दों के सामान्य अर्थ उस क्षेत्र विशेष में समान भी हो सकते हैं और भिन्न भी हो सकते हैं। किन्तु, जब हिन्दी पत्रिका में रचनाएँ प्रस्तुत करने का समय आता है तो व्यक्ति की अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता और रचनात्मकता को नया आयाम मिलता है। मैं एक राजभाषा कर्मी और सरकारी कार्मिक होने के अनुभव से यह समझता हूँ कि संघ सरकार की राजभाषा के रूप में सरकारी कार्यों से भी बाहर निकल कर हिन्दी कार्यालय में अभिव्यक्ति और सम्प्रेषण का माध्यम बने। पत्रिकाओं में कार्य-क्षेत्र के अनुभव के अलावा सम-सामयिक विषयों पर भी निबंध और रचनाएँ लिखी जाएँ।

सभी पाठकों से करबद्ध निवेदन है कि पत्रिका के आवरण और कलेवर के साथ-साथ रचनाओं पर अपनी आलोचना एवं समालोचना प्रस्तुत करें।

राजीव रंजन

राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी



संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मानवाधिकार दिवस



डॉ. सुधा तिवारी
वरिष्ठ अनुवादक

**"All human beings are born free and equal in dignity and rights. they are endowed with reason and conscience and should act towards one another in a spirit of brotherhood."
(Universal declaration of Human Right, 1948
Article 1)**

बीते 10 दिसंबर को हमने मानवाधिकार दिवस के रूप में मनाया। मानवाधिकार को हमारे समय के एक महती आदर्श के रूप में चिह्नित किया गया है, ये वो मूलभूत, बहुमूल्य एवं अहस्तांतरणीय अधिकार हैं जो व्यक्ति को जन्म से ही और उसके मानव-मात्र होने के कारण प्राप्त हैं। देश की आजादी के समय और उसके बाद भी मानवाधिकार का प्रश्न केंद्र-बिंदु में था और यह सच है कि वर्तमान समय में मानवाधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ी है परन्तु यह है कि क्या सभी मनुष्यों को यह जन्म-आधारित अधिकार सुलभ कराया जा सका है।

यदि विषय का तथ्यपरक विश्लेषण किया जाये तो उत्तर नकारात्मक ही मिलेगा। देश के सौ से ज्यादा जिलों के एक करोड़ से अधिक ग्रामीण-आदिवासियों को भाषायी,

सांस्कृतिक एवं जीवन की मूलभूत सुविधाओं हेतु संघर्ष करना पड़ रहा है। आन्ध्र प्रदेश के तेलंगाना, बंगाल के मिदनापुर, बांकुड़ा, पुरुलिया, महाराष्ट्र के विदर्भ, छत्तीसगढ़ के बस्तर, मध्य प्रदेश और ओडिशा के बारह सीमावर्ती जिलों में प्रति व्यक्ति आय राष्ट्रीय आंकड़े से बहुत नीचे है। माओवादी प्रभावित इलाकों में विकास की बात तो दूर, जीने की बुनियादी जरूरतें तक नहीं हैं।

महिलाओं से जुड़ी खबरों के प्रति मीडिया-संवेदनशीलता

उपलब्ध आंकड़ों का वस्तु-स्थिति के समक्ष विश्लेषण मीडिया की भूमिका पर संदेह खड़े करता है। मीडिया अध्ययन केंद्र के एक अनुसंधान में वह तथ्य सामने आये हैं कि मीडिया में स्त्री विषयों से सम्बंधित खबरों का प्रतिशत केवल 3 प्रतिशत है और उसमें भी मुख्यतः हत्या, उत्पीड़न और बलात्कार पर केंद्रित खबरें ही हैं। महिलाओं के खिलाफ हो रहे अत्याचारों के प्रति समुचित जन-जागरूकता का अभाव है और समाज तथा परिवारों में स्त्रियों का उत्पीड़न इतना अधिक है कि वह बहुधा देखने वाले की दृष्टि में स्वाभाविक लगने लगता है, इस तरह





समूह एकता
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



अपराध करने वाले व्यक्ति को यह अंदाजा ही नहीं होता कि वह जो कृत्य कर रहा है वो किसी अपराध की श्रेणी में आता है। दूसरे अधिकांश महिलाएं अपने ऊपर हुए उत्पीड़न की शिकायत नहीं करतीं। कई बार पुलिस शिकायत दर्ज करने से इनकार कर देती है और दर्ज शिकायतों पर कार्रवाई की प्रक्रिया या तो धीमी होती है या नगण्य। इस सब के बाद मीडिया उन्हीं खबरों को प्राथमिकता देता है जिसमें मसाला हो, अधिकतर क्राइमरिपोर्टिंग पुलिस फ़ाइल पर आधारित होती है, या खबर तब दी जाती है जब कोई बड़ा नेता उसमें रूचि ले और इन सब के बाद जो खबर आती है बजाय उस खबर के पीछे के सत्य के वैधानिक निहितार्थ पर जोर देने के, उसके इतिवृत्त में अधिक रूचि ली जाती है। गृह-मंत्री ने लोकसभा में बताया कि महिलाओं के खिलाफ होने वाले अपराधों, जिनकी शिकायत दर्ज कराई गई है, की संख्या वर्ष-2008 से लेकर अब तक छ लाख से अधिक है। इससे हम उन अपराधों की संख्या को कल्पना कर सकते हैं जिनकी शिकायत दर्ज नहीं कराई गई है। स्त्री की मातहत स्थिति: एक सत्रीदुहरे-तिहरे दबावों से एक साथ गुजरने के लिए अभिशप्त हैं। कानून और समाज के नीति-नियम एक जगह उसे बांधते हैं तो उसका 'सेल्फ' उसे आंतरिक गहराइयों में मुक्त होने से रोकता है। पति एवं पिता की संपत्ति के उत्तराधिकार से परेक्षित: वंचित स्त्री को गहनों के प्रेम में उलझा हुआ घोषित किया जाता है। इसकी जड़ें काफी गहरी

हैं। ब्रिटिश शासन में स्त्रीधन के दयाभाग सिद्धांत को जो अनिवार्य एवं संकुचित व्यवस्था हुई, उसने औरत के अधिकारों को अपूरणीय क्षति पहुंचायी, उससे संपत्ति का अधिकार संकुचित कर दिया गया।

“As the pluralistic communities became characterized as ‘Hindu’, the women's right to property ownership became curtailed....the Bengal school followed the Dayabhaga principle of strict construction of stridhana. Gradually, this notion of a constrained and limited stridhana became the accepted principle of Hindu law for the whole of British India (with a few concessions granted to the Bombay Presidency.)”

यद्यपि भारतीय संविधान उसे संपत्ति का अधिकार (Right to Property) देता है परन्तु उससे अपेक्षा वही की जाती है कि इस अधिकार का वह अपने हित में उपयोग न करे, उसे उदारतापूर्वक त्याग दे। अंग्रेजी उपन्यासों में स्टीम ऑफ कांशसनेस शैली की प्रणेतावर्जीनियावुल्फ ने इसीलिए कहा कि एक स्त्री लिख सके इसके लिए आवश्यक है कि उसके पास एक कमरा हो और वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र हो। एनेसफ्लेविया ने अपनी पुस्तक 'Law and Gender Inequality' में पितृसत्तात्मक समाज में पारिवारिक विधियों की उत्पत्ति की पड़ताल करते हुए कहती है कि जाति, वर्ग एवं वंश-गत शुचिताओं का एक कठोर यौन





संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



नियंत्रण द्वारा अनुरक्षण किया जाता है। दंडात्मक निवारक उपायों तथा आर्थिक अधिकारों के निषेध, वह साधन हैं जिसके माध्यम से वह नियंत्रण स्थापित किया जाता है -

"While examining the evolution of family laws situated within a patriarchal social structure, discrimination against women is a foregone conclusion. Caste, class and clan purities are maintained through a strict sexual control. Punitive deterrent measures and denial of economic rights are the means through which this control is exercised." ii

सकारात्मक विकास

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद एवं संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार परिषद में भारत का चुनाव इसकी बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्थिति को रेखांकित करता है। यद्यपि एमनेस्टी इंटरनेशनल ने वर्ष-2012 के अपने रिपोर्ट में कहा है कि-"The government maintained its focus on economic growth, at times at the cost of protecting and promoting human rights within the country and abroad." iii फिर भी आज महिलाएं सभी क्षेत्रों में आगे बढ़ रही हैं इसका प्रमाण है कि महिला साक्षरता दर में वृद्धि सभी क्षेत्रों अर्थात्



कुल (11.79 अंक), ग्रामीण (12.62 अंक) तथा शहरी (7.06 अंक) क्षेत्रों में पुरुष साक्षरता दर की तुलना में उल्लेखनीय रूप से उच्चतर है। महिला साक्षरता दर में केरल (92.92) का ग्रामीण क्षेत्रों में प्रथम स्थान है जब कि मिजोरम (98.1) शहरी क्षेत्रों में पहले स्थान पर है।iv आधुनिक स्त्रीअस्मिता के विकास के परिप्रेक्ष्य में हम स्त्री समानता के बेहतर अवसरों और उसके मानव-अधिकारों को मान्यता देने वाले एक बेहतर समाज-व्यवस्था की कामना कर सकते हैं जहाँसशक्त स्त्रियों का उदभव हो।





भारतीय कुटुम्बकन
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसत्ता पार्टी सार्वजनिक
Dedicated to Truth in Public Interest



मेरे सेवा जीवन की स्मृतियाँ



भूपेन बंदोपाध्याय,
सेवानिवृत्त वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

धीरे-धीरे समय पंख लगा कर उड़ता रहा और सैंतीस वर्षों से अधिक की सेवा प्रदान करने के उपरांत वर्ष 2017 के आरंभिक दिनों में मैं अधिवर्षिता पर सेवानिवृत्त हो गया। किन्तु, सेवा-निवृत्ति को इस अवश्यंभावी घटना को मैं अपने काफ़ी प्रयत्न के उपरांत भी अपने तक न तो सीमित रख पाया हूँ और न तो उसे विस्मृत ही कर पाता हूँ और बीती कई घटनाएँ मेरे स्मृति पटल पर घूमती रहती हैं।

सेवा निवृत्ति के ठीक अगले दिन ही जब वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी श्री शिशिर कान्त घोष ने मुझे अपने सेवा कालीन अनुभवों को संकलित करने का अनुरोध किया तो इसमें मैं किंचित संशय में था क्योंकि मेरे आधिकारिक अनुभव और स्मृतियाँ लेखापरीक्षा प्रश्नों और विचार घर आधारित और सीमित थे। अतः मैं एक प्रयत्न कर रहा हूँ कि अपने उन स्मृतियों और अनुभवों को आपसे साझा कर सकूँ। धनबाद, लिलुआ, बांसबौरिया और हावड़ा में भारतीय रेल को साढ़े तीन वर्षों की सेवा प्रदान करने के उपरांत मैंने वर्ष 1982 के शीत ऋतु में भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के कार्यालय, महालेखाकार, सिक्किम में कार्यभार ग्रहण किया जिसके लिए मेरे गंगटोक की यात्रा में चोरी के एगुण के अद्भुत दर्शन से मेरा स्वागत होता रहा। मेरे वहाँ कार्यग्रहण से ठीक एक वर्ष पूर्व ही वहाँ कार्यालय का गठन हुआ था। कार्यालय में हर वस्तु एक गुड़िये और गुड़े के घर जैसा नया था। एक सामान्य कार्यालय की कार्यालयीन औपचारिकता भी नहीं थी।

कार्यालय के कार्मिक कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक पूरे भारत वर्ष के थे जो मुख्यतः प्रतिनियुक्ति पर थे। महालेखाकार और उप महालेखाकार महोदय को विभिन्न अनुभागों की उपास्थिति और प्रशासन में काफ़ी मुश्किलों का सामना करना पड़ता था। कुछ बातों को छोड़कर जीवन बिलकुल ही शांत था। गंगटोक का शहरी जीवन हो या दौरे पर सुदूर पहाड़ी स्थान हो घटनाएँ स्मृति के योग्य थीं। यद्यपि कार्यालय छोटा था हम लोग अक्सर सांस्कृतिक कार्यक्रम, पिकनिक, कार्यालयों के मध्य टूर्नामेंट एवं वसंत पंचमी को सरस्वती पूजा आयोजित किया करते थे। यहाँ मुझे वर्ष 1983 के आरंभिक दिनों में श्रीमती इन्दिरा गांधी को लांअर सचिवालय में अपने काफ़ी करीब से देखने का अवसर मिला जो उस समय गंगटोक के दौरे पर थीं।

उस समय गंगटोक अब की तुलना में न सिर्फ़ हरा भरा था बल्कि बहुतायत में लकड़ी के बने हुये मकान भी थे। कंचनजंघा चोटी के दर्शन, तीस्ता नदी की सुंदरता और घने वन का विहंगम दृश्य, बाग-बगीचे, आश्रम, वन, विहार की सुंदरता से उत्तर सिक्किम का दृश्य विस्मृत नहीं किया जा सकता है। छह वर्षों के अविस्मरणीय समय के उपरांत वर्ष 1988 में मेरा स्थानांतरण कार्यालय, महालेखाकार, पश्चिम बंगाल, कोलकाता में हो गया। यहाँ कार्य-क्षेत्र काफ़ी विस्तृत था जो दार्जिलिंग और सागर टापू को समाहित करते हुये पूरे बंगाल में था। यहाँ कार्य से जुड़े



सर्वोपर कुरुकलम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकराज्याचे सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आजादी का
अमृत महोत्सव

अनुभव को काफी विस्तार मिला जिसमे कार्य छोटी और बड़ी इकाइयों में हुआ करता था। इन वर्षों में कार्य-निष्पादन की कार्य-विधि और प्रकार में भी काफी बदलाव हुये। इस प्रकार, पंद्रह वर्षों की सेवा प्रदान करने के उपरांत मेरा स्थानांतरण हुआ और मैंने कार्यालय, एम. ए. बी. /गंची के अधीन आर.ए.ओ., डी.एस.पी. में कार्य-भार ग्रहण कर लिया। इस प्रकार, महालेखाकार कार्यालय में विद्युत क्षेत्र में कार्य करने के उपरांत मुझे स्टील क्षेत्र में कार्य करने का अवसर और अनुभव प्राप्त हुआ। स्टील क्षेत्र के अनुभवों से मुझे काफी लाभ हुआ जब मेरा स्थानांतरण कार्यालय, एम.ए.बी.-II, कोलकाता में हो गया जो कार्यालय वरिष्ठ अधिकारियों के मध्य डी. सी. ए. कोयला के नाम से चर्चित और लोकप्रिय था। कार्यग्रहण के उपरांत मुझे यह अनुभव हुआ कि वह कार्यालय एक अन्य प्रकार का कार्यालय था। मैंने प्रयत्न किया कि मैं समय का पालन करूँ और समय-निष्ठा के साथ कार्य-निष्पादन करूँ क्योंकि यहाँ कार्यालय-प्रधान के साथ-साथ ग्रुप अधिकारी के सीधे निर्देशन में कार्य करना पड़ता था। शीघ्र ही मुझे असामान्य प्रकृति का कार्य भी सौंपा गया। लेकिन, हमने

समूह प्रयत्न के बल पर सर्वदा ही कार्य-निष्पादन अच्छे से किया और हमें यथोचित सम्मान प्राप्त हुआ। मैंने यह भी पाया कि कठिन कार्य और विषम परिस्थितियों में, मेरे सहकर्मियों एवं वरिष्ठ अधिकारियों चाहे वो मेरे कार्यालय के हों अथवा अधीनस्थ कार्यालय के हों अथवा मुख्यालय के हों मेरे हर संभव सहायता की और कार्यालय का भी सम्मान बढ़ाया।

मैं तो इस पर विश्वास करता हूँ कि मैं एक साधारण व्यक्ति हूँ। किन्तु, इसके बावजूद भी परिस्थिति की मांग पर कई बार मुझे अपना सर्वोत्तम प्रयत्न लगाकर प्रतिकूल स्थिति को अपने नियंत्रण में करना पड़ता था। लेकिन यह सब इस विभाग में अंतर्निहित शक्तियों और संवशक्तिमान ईश्वर के आशीर्वाद के कारण कई संरक्षकों के अधीन कार्य करने के सौभाग्य के कारण ही संभव हो पाता था। इन स्मृतियों और अनुभवों को याद कर मुझे असीम आनंद की प्राप्ति होती है। मुझे बड़े गर्व का अनुभाव आज भी होता है जब मैं सोचता हूँ कि मैं ने अपने जीवन के एक बड़े काल-खंड में इतने सम्माननीय और गौरवशाली विभाग का एक हिस्सा बनकर अपना योगदान दिया।





भारत सरकार
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

स्टार्ट अप एवं यूनिकॉर्न



राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी

हमारे देश की प्रगतिशील और जीवंत अर्थव्यवस्था और उससे जुड़ी शब्दावली में विगत कुछ वर्षों से "स्टार्ट अप" एवं "यूनिकॉर्न" का व्यवहार किया जा रहा है। आइये समझते हैं इन दो शब्दों को जो आपस में काफी मिलते जुलते हैं। दोनों के अर्थ प्रथम दृष्टया तो समान लगते हैं किन्तु उनमें कुछ अंतर है।

स्टार्ट अप जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है - ऐसे उद्यम को कहते हैं जो कि नवीन है और उसमें नवोन्मेष, नवाचार, उद्यमिता और जोखिम के साथ-साथ एक ऐसे उत्पाद और/अथवा सेवा की संकल्पना की गई जो अभी बाज़ार में बिल्कुल उसी रूप में उपलब्ध नहीं है। उत्पाद और/अथवा सेवा की संकल्पना जब मूल रूप लेकर किसी कंपनी, प्रतिष्ठान, व्यापारिक इकाई अथवा वाणिज्यिक संस्था के द्वारा बाज़ार में विक्रय एवं विपणन के लिए लाई जाती है तो उस छोटे नवीन उद्यम को ही स्टार्ट अप कहते हैं। अतः हिन्दी भाषा में हम स्टार्ट अप को एक छोटा नवीन उद्यम या युं कहें तो सिर्फ एक छोटा उद्यम कह सकते हैं। उदाहरण के लिए - ओला एवं उबर के टैक्सी ऐप के द्वारा टैक्सी सेवा प्रदाता

कंपनियाँ। टैक्सी को किराए पर लेने की सेवा का लाभ सभी ने लिए है। पहले खाली टैक्सी को देखने पर जोर से चिल्ला कर और हाथ उठाकर यह पृच्छा पड़ता था कि टैक्सी खाली है अथवा नहीं। उसके उपरंत पुनः यह प्रश्न करना पड़ता था कि वो टैक्सीवाला आपके गंतव्य पर आपको ले जाने के लिए तैयार है अथवा नहीं। यह सेवा इस रूप में अभी भी विद्यमान है और बहुत लोगों के द्वारा इसे पसंद भी किया जाता है और इसका लाभ भी उठाया जाता है। किन्तु, ओला और उबर कंपनियाँ एक स्टार्ट अप की संकल्पना को समझने के लिए आवश्यक हैं। ये कंपनियाँ उसी किराए के टैक्सी सेवा को एक नए रूप में लेकर आई हैं। अब आपको न चिल्लाने की आवश्यकता है, न हाथ उठाकर या न हाथ हिलाकर इशारे करने की आवश्यकता है और न ही इस बात की चिंता है कि कोई आपसे अधिक तौब्र ध्वनि में टैक्सी चालक का ध्यान आकर्षित कर उसी टैक्सी की सेवा का लाभ आपके बदले ले लेगा। वर्तमान और प्रचलित परिपाटी के अनुसार, किसी भी कंपनी या निकाय के लिए यह आवश्यक है कि वो एक



ऐसे नवीन विचार या प्रस्ताव लेकर आए जिसमें ऐसी क्षमता हो कि वर्तमान बाज़ार और बाज़ार व्यवस्था को विघटित कर दे या तितर-बितर करने के लायक हो। यहाँ विघटन या तितर-बितर करना नकारात्मक अर्थ में नहीं लिया जाना चाहिए। बल्कि इसे सकारात्मक, गतिशील, प्रगतिशील और जैवंत रूप में लिया जाना चाहिए। यहाँ तितर-बितर और विघटन का अभिप्राय बाज़ार व्यवस्था में सकारात्मक गतिशीलता, सक्रियता और उठाव लाने से है। किसी नए उद्यम द्वारा प्रदत्त सेवा और उत्पाद की गुणवत्ता ऐसी हो जो सामान्य जन-मानस और उपभोक्ताओं में शोध ही लोकप्रिय और चर्चित हो जाने की क्षमता रखती हो। ऐसा विचार या आईडिया जो व्यापार प्रतिमान (बिजनेस मॉडेल) में परिवर्तन लाने में सक्षम हो या नया व्यापार प्रतिमान अर्थव्यवस्था में प्रस्तुत कर दे। कई फिनटेक कंपनियाँ जैसे पेटोएम ने नकदों के हस्तांतरण के लिए नोट एवं सिक्के को अनावश्यक कर दिया है। इसी पेटोएम नाम से प्रचलित सेवा प्रदाता कंपनियों ने विगत कुछ दिनों पहले वन नाइंटी सेवेन कम्यूनिकेशन के नाम से पूंजी बाज़ार में आरंभिक सार्वजनिक शेयर प्रस्ताव (आई.पी.ओ. या इनिशियल पब्लिक ऑफर) लाया था।



यूनिकॉर्न किसी भी वैसी निजी कंपनी या निजी स्वामित्व वाली कंपनियों के लिए प्रयोग किया जाता है जिस कंपनी ने 1 बिलियन यू.एस. डॉलर के मूल्य को पार कर लिया है। इस परिभाषा के अनुसार, रिलायंस इंडस्ट्रीज़ और इंफ़ॉसिस जैसी कंपनियाँ यूनिकॉर्न बनने से पूर्व एक नवोन छोट उद्यम ही हुआ करती थीं। यूनिकॉर्न का शाब्दिक अर्थ एक ऐसे कल्पित प्राणी या जीव से है जिसका वर्णन पौराणिक कथाओं या दंत कथाओं में मिलता है। पौराणिक कथाओं और दंत कथाओं में, यूनिकॉर्न एक ऐसे मायावी घोंड़े के समान प्राणी को कहते हैं जिसके पास जादुई शक्तियाँ हैं। यूनिकॉर्न स्कॉटलैंड का शासकीय, राजकीय और राष्ट्रीय प्राणी भी है। व्यापार और कॉर्पोरेट जगत में एवं साधारण बोल-चाल की भाषा में वह एक ऐसी उपमा है या एक ऐसा रूपक है जो ऐसे विभूतियों या व्यक्तियों के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है जिसने कौशल-विकास, ज्ञान-अर्जन, अनुभव-प्राप्ति, व्यापार कौशल और वाणिज्यिक सेवा प्रदाता के रूप में ऐसी निपुणता प्राप्त कर ली है जो अद्वितीय हो अथवा अत्यंत ही दुर्लभ हो। शब्द “यूनिकॉर्न” न सिर्फ़ एक सांख्यिकीय दुर्लभता का परिचायक है बल्कि वास्तविक दुर्लभता का भी परिचायक है। यूनिकॉर्न की प्रासंगिकता छोटी अवधि के लिए नहीं है बल्कि माध्यम और दीर्घ अवधि के लिए है। यूनिकॉर्न के उत्पाद और सेवा की गुणवत्ता और प्रासंगिकता दीर्घ-कालिक संधारणीयता को समाहित किए होती है। यहाँ यह भी उल्लिखित करना उचित होगा कि व्यापारिक और कॉर्पोरेट शब्दावली में कंपनियों को यूनिकॉर्न तभी तक कहा जाता है जब तक वे शेयर बाज़ार में सूचोबद्ध नहीं हो जाती हैं। जिन कंपनियों की बाज़ार पूंजी 10 बिलियन यू.एस. डॉलर से अधिक हों उन्हें डेकाकॉर्न कहा जाता है। जिन कंपनियों के बाज़ार मूल्य 100 बिलियन यू.एस. डॉलर से अधिक हों उन्हें ह्येक्टाकॉर्न कहा जाता है। स्टार्ट अप अथवा यूनिकॉर्न कंपनियों में एक प्रकार की सेवा अथवा उत्पाद के विभिन्न या भिन्न-भिन्न प्रकार के रूपांतर हो सकते हैं।



संयुक्त कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



भारत और योग



संजीव कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

भारत एक भौगोलिक खंड के अलावा एक सांस्कृतिक इकाई भी है जहाँ इतिहास की सबसे प्राचीनतम एवं उन्नत सभ्यता का विकास हुआ। दुनिया जब कबीलों में रहते हुए उसे ही सबकुछ मान एक दुसरे को मारती काटती और संसाधनों पर अनैतिक कब्जा जमाने की ज़िद में आगे बढ़ रही थी तब भारत 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'एकः सूते सकलं' के दर्शन से जीवन के अर्थ को परिभाषित कर रहा था। भारत ने दुनिया को गणित, दर्शन, आध्यात्म, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद जैसे अनेकों अमूल्य उपहार दिए हैं किन्तु वर्तमान में योग दुनिया में सबसे आकर्षक एवं चर्चित विषयों में से एक बन गया है जिसपर हमारी चर्चा केन्द्रित होगी। योग वर्तमान समय की आवश्यकता है जिसे देर सबेर पूरा विश्व किसी न किसी रूप में अपना रहा है। भारत की यह हजारों वर्षों पुरानी परंपरा आज मानव कल्याण के लिए गंभीर प्रयास कर रही है जिसका श्रेय इस भारत भूमि में अवतरित हुए संतों को जाता है जिन्होंने अपने त्याग और पुरुषार्थ से योग के महत्व से समाज को परिचित कराया।

योग शब्द का प्रयोग मुख्यतः आत्मा को ईश्वर के साथ जोड़ने को कहा जाता है। आत्मा को ईश्वर से जोड़ने का तात्पर्य है कि जीवात्मा को शुद्ध व पवित्र बनाकर उसका निरन्तर ध्यान करते हुए उसमें खो जाना जैसा कि हम यदा कदा अपने इच्छित विषय का ध्यान व अध्ययन करते हुए उसमें पूर्णतः खो जाते हैं। ईश्वर के गुणों व उसके उपकारों का जब हम ध्यान करते हुए एकाग्र हो जाते हैं और हमारे मन व अन्य सभी इन्द्रियों का बाह्य जगत से सम्पर्क सर्वथा टूटा हुआ होता है, तो यह योग की उन्नत अवस्था होती है। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए अनेक साधनों व उपायों का सहारा लेना होता है जिसमें यम व नियम योग की प्रथम सीढ़िया कहलाते हैं। बिना यम व नियम का पालन किये योग में स्थिति बनाना व सफलता प्राप्त करना सम्भव नहीं है। अतः इन्हें जानकर इनका पूरी निष्ठा व तत्परता से हर समय पालन करना आवश्यक होता है। यम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह हो कहते हैं। अहिंसा का अर्थ दूसरों के प्रति वैर अथवा विरोध की भावना को

वसुधैव कुटुम्बकम्





संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



समाप्त करना, सत्य का ही पालन करना तथा असत्य व्यवहार से दूर रहना है। अस्तेय का अर्थ चोरी न करना अर्थात् छुप कर व प्रकट रूप में ऐसा कोई कार्य न करना है जो मर्यादा व आचरण के नियमों के विपरीत हो। ब्रह्मचर्य का अर्थ है कि अपनी सभी ज्ञान व कर्मेन्द्रियों को वश में रखना, उन्हें स्वेच्छाचार वा अमर्यादित आचरण से रोक कर ईश्वर के गुण-कीर्तन व चिन्तन-मनन सहित ईश्वर के अनादि काल से हम पर किये गये उपकारों को स्मरण करते रहना है। अपरिग्रह का अर्थ होता है कि आवश्यकता व सुख के साधनों का अधिक मात्रा में संचय न करना। अपरिग्रही जीवन ऐसा जीवन बनाना होता है कि जिससे कम से कम साधनों व धन से हमारा जीवन त्यागपूर्वक व्यतीत हो। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए हमें सांसारिक पदार्थों के प्रति मोह व संग्रह की भावना का त्याग कर ईश्वर को प्राप्त करने की अपनी इच्छा व भावना को मुख्य स्थान देते हुए अपने सभी व्यक्तिगत व सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करना होता है।

यम की तरह नियम भी पांच है जो योग की सफलता में अपरिहार्य एवं महत्वपूर्ण हैं। यह पांच नियम हैं शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान। शौच आन्तरिक व बाह्य स्वच्छता को कहते हैं। सन्तोष का अर्थ है कि समस्त इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर किसी भी अवस्था में असन्तुष्ट न होना। अनुकूल और प्रतिकूल स्थितियों में

सन्तुष्ट रहने का नाम ही सन्तोष है। तप का अर्थ है कि योगदर्शन के अनुसार अपने जीवन को सक्रिय रखते हुए आलस्य न करना और योग के सभी नियमों व साधनों का अभ्यास व पालन करते हुए योगमार्ग पर आगे बढ़ते जाना। तप को पुरुषार्थ से युक्त जीवन भी कह सकते हैं जिसका उद्देश्य ईश्वर की प्राप्ति में बाधक सभी विघ्नों पर विजय प्राप्त करते हुए अधिक से अधिक पुरुषार्थ व तपस्वी जीवन व्यतीत करना। तप के बाद स्वाध्याय का स्थान है जो अत्यन्त महत्वपूर्ण है। स्वाध्याय से ही योग के मार्ग को जाना जाता है। इसके लिए सत्यार्थप्रकाश का अध्ययन कर मनुष्य जीवन के उद्देश्य व वैदिक ज्ञान विषयक प्रमुख बातों को जानकर योग दर्शन सहित उपनिषद, दर्शन, वेद भाष्य एवं वैदिक साहित्य के इतर ग्रन्थों का अध्ययन करना होता है। ऐसा करके ही हम ईश्वर और जीवात्मा सहित प्रकृति के यथार्थ स्वरूप व इनके विज्ञान से पूर्णतया परिचित हो जाते हैं। इसका पालन करते हुए योग साधक को क्रियात्मक अभ्यास व अपने आचरण को शुद्ध, पवित्र रखते हुए अधिक से अधिक समयावधि तक नियमित ईश्वर का ध्यान, चिन्तन, जप व स्वाध्याय पर केन्द्रित रखना होता है। स्वाध्याय करते हुए पांचवें नियम ईश्वर प्रणिधान का भी योगाभ्यासी को पालन करना होता है। ईश्वर प्राणिधान ईश्वर को जानकर समर्पित भाव से उसकी कृपा प्राप्त करने के लिए प्रतिदिन प्रातः व सायं निश्चित समय पर न्यूनतम एक



संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



घटां स्तुति, प्रार्थना व उपासना द्वारा उसका वन्दन करना है। सभी यम व नियमों को योग साधना की नींव कह सकते हैं। इनका अभ्यास हो जाने पर योगाभ्यासी योग साधना के मार्ग पर तीव्रता से आगे बढ़ता है और उसको ईश्वर भक्ति से प्राप्त होने वाले लाभ मिलना आरम्भ हो जाते हैं।

योग साधना में आसन का अपना विशेष महत्व है। यदि आसन सिद्ध नहीं होगा तो ईश्वरोपासना में एकाग्रता व ध्यान की निरन्तरता स्थापित नहीं की जा सकती। आरम्भ में कठिनाईयां आती हैं परन्तु अभ्यास से स्थिर आसन को प्राप्त किया जा सकता है। योग साधना के लिए युवावस्था उपयुक्त समय है। आसन पद्मासन व सुखासन आदि कोई भी हो सकता है। आसन के बाद योग साधक को प्राणायाम का अभ्यास करना होता है। प्राणायाम का तात्पर्य श्वास प्रश्वास वा सांस के लेने व छोड़ने में उसकी गति का रुक जाना वा रोक देना अथवा उसमें अन्तर डाल देने को कहते हैं। प्राणायाम से स्वास्थ्य विषयक अनेक लाभों के साथ मन का ईश्वर में एकाग्र होना सिद्ध होता है। प्राणायाम से मन नियंत्रित होता है और ईश्वरोपासना में स्थिर रहता है। महर्षि दयानन्द ने सन्ध्योपासना विधि में तथा अन्यत्र प्राणायाम विधि का उल्लेख किया है। महात्मा नाराण स्वामी जी ने इस पर लघु पुस्तिका भी लिखी है। उसको पढ़कर अभ्यास करते हुए किसी योगी से भी परामर्श कर लेना उचित होता है जिससे उसकी किसी क्रिया से

स्वास्थ्य को किसी प्रकार की हानि न हो।

अष्टांग योग में पांचवे स्थान पर प्रत्याहार है। प्रत्याहार में सभी ज्ञानेन्द्रियों का अपने विषयों से हटा कर अपने चित्त व आत्मा में समाहित करना होता है। प्राणायाम के अभ्यास और मन व आत्मा को ईश्वर चिन्तन व जप आदि में लगाने से यह स्थिति प्राप्त होती है। योग का छठ सौषान धारणा है जो देह के किसी अंग विशेष अथवा लक्ष्य विशेष में चित्त को बांध देने व टिका देने को कहते है। धारणा के सिद्ध होने पर ईश्वर का ध्यान करना सुगम हो जाता है। ध्यान मन को सांसारिक व इन्द्रियों के विषयों के चिन्तन से पूर्णतया मुक्त व रोक देने को कहा जाता है। जब मन में विषयों का चिन्तन रुक जायेगा तो आत्मा ईश्वर के चिन्तन-मनन, स्तुति-प्रार्थना व जप आदि में लग कर ईश्वर से जुड़ कर उससे एकाकार होकर समाधि अर्थात् ईश्वर साक्षात्कार को प्राप्त होते हैं। समाधि अवस्था वह अवस्था है कि जब योगी ईश्वर को समर्पित हो जाता है तथा उसे अपनी किसी इन्द्रिय व उसके विषयों का किंचित भी ज्ञान नहीं रहता। वह ईश्वर के ध्यान में निमग्न रहकर उसके आनन्द का अनुभव करता है। ईश्वर विषयक कोई शंका व जिज्ञासा इस अवस्था में शेष नहीं रहती और वह पूर्णतया निभ्रान्त ज्ञान को प्राप्त होता है। समाधि वा ईश्वर साक्षात्कार ही मनुष्य जीवन का परमोत्तम लक्ष्य व उद्देश्य है। इसको प्राप्त कर लेने पर संसार में कुछ भी प्राप्त करना



शेष नहीं रहता। जिस उद्देश्य से परमात्मा ने हमें मनुष्य का जन्म दिया है, वह पूरा हो जाता है। इस स्थिति को बनाये रखना जीवन मुक्त अवस्था कहलाता है। बहुत से लोग समाधि को प्राप्त होकर भावी जीवन में अपने किन्हीं अपकार्यों से गिर भी सकते हैं, अतः योगी का अपने आचरण में सावधान रहना बहुत आवश्यक है। महर्षि दयानन्द के जीवन को एक योगी का आदर्श जीवन माना जा सकता है। उनके अनेक विद्वानों के लिखे हुए जीवन चरित्र भी उपलब्ध हैं जिनका अध्ययन कर अनुकरण द्वारा लाभ उठाया जा सकता है। योगाभ्यास करते हुए योग साधक को योग दर्शन व उस पर विद्वानों के उत्तमोत्तम भाष्यों का अध्ययन करते हुए योग विषय में अपने ज्ञान को अद्यतन रखना चाहिये। स्वाध्याय विषयक योग सूत्र 2/44 'स्वाध्यायादिष्टदेवतासम्प्रयोगः' का रहस्य बताते हुए पं. उदयवीर शास्त्री ने लिखा है कि श्रद्धापूर्वक स्वाध्याय के अनुष्ठान से अनेक बार स्वाध्यायी के मस्तिष्क में आकस्मिकरूप से अभिलषित अर्थ प्रतिभाष हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है, जैसे कोई दिव्य आत्मा आकर इस अर्थ को बता गया है। ऐसे स्वाध्यायशील योगी के मस्तिष्क अथवा भावनाओं में देव, ऋषि एवं सिद्ध आत्मा दर्शन देते जाने जाते हैं। योगी इनसे अचानक सन्मार्ग एवं सम्प्रवृत्तियों की दिशा को जानने समझने में सफल होता है।

ऋषि दयानन्द योग विषयक अपने व्याख्यान में सत्यार्थप्रकाश के सप्तम् समुल्लास में कहते हैं कि जो उपासना (अर्थात् योग) करना चाहे, उसके लिये यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रखे। सर्वदा सब से प्रीति करे। सत्य बोले। मिथ्या कभी न बोले। चोरी न करे। सत्य व्यवहार करे। जितेन्द्रिय हो। लम्पट न हो और निरभिमानी हो। अभिमान कभी न करे। ये पांच प्रकार के यम मिल के उपासना योग का प्रथम अंग हैं। (उपासक व योगी को) राग-द्वेष छोड़ भीतर और जलादि से बाहर पवित्र रहे। धर्म से पुरुषार्थ करने से लाभ में न प्रसन्नता और हानि में अप्रसन्नता न करे। प्रसन्न होकर आलस्य छोड़ सदा पुरुषार्थ किया करे। सदा देख-सुखों का सहन और धर्म ही का अनुष्ठान करे, अधर्म का नहीं। सर्वदा सत्य शास्त्रों को पढ़े पढ़ावे। सत्पुरुषों का संग करे और 'ओम' इस एक परमात्मा के नाम के अर्थ का विचार करे। नित्यप्रति जप किया करे। अपने आत्मा को परमेश्वर की आज्ञानुकूल समर्पित कर देवे। इन पांच प्रकार के नियमों को मिला के उपासना योग का दूसरा अंग 'नियम' कहाता है। ... जब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभिप्रदेश में, वा हृदय, कण्ठ, नेत्र, शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्मा और



संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो कर संयमी होवें। जब इन साधनों को करता है, तब उस का आत्मा और अन्तःकरण पवित्र होकर सत्य से पूर्ण हो जाता है। नित्यप्रति ज्ञान-विज्ञान बढ़ाकर मुक्ति तक पहुंच जाता है। जो आठ प्रहर में एक घड़ी भर भी इस प्रकार ध्यान करता है, वह सदा उन्नति को प्राप्त हो जाता है। वहां सर्वज्ञादि गुणों के साथ परमेश्वर की उपासना करनी सगुण, और द्वेष, स्व, रस, गन्ध, स्पर्शादि गुणों से पृथक् मान, अतिसूक्ष्म आत्मा के भीतर-बाहर व्यापक परमेश्वर में दृढ़ स्थित हो जाना निर्गुणोपासना कहाती है। इस का फल जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है, वैसे परमेश्वर के समीप प्राप्त होने से सब दोष दुःख छूट कर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं, इसलिये परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये। इससे, इस का फल पृथक् होगा, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घभरावेगा और सब को सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? और जो परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना नहीं करता, वह कृतघ्न और महामूर्ख भी होता है क्योंकि जिस परमात्मा ने इस जगत् के सब पदार्थ जीवों को सुख के लिये दे रखे हैं, उस का गुण भूल जाना, ईश्वर ही को न मानना, कृतघ्नता और मूर्खता है। इन पंक्तियों में ऋषि दयानन्द ने जो कुछ लिखा है वह योग साधना के ही अन्तर्गत है।

लेख को विराम देने से पूर्व हम ऋषि दयानन्द

सरस्वती जी की पंचमहायज्ञ विधि का उल्लेख करना समीचीन समझते हैं जिसमें प्रथम महायज्ञ 'ब्रह्म यज्ञ वा सन्ध्योपासनाविधि' है। सभी आर्य इसे प्रातः व सायं समय करते हैं। यह योग साधना का प्रमुख साधन होने से यथार्थ योग है जिसको पूर्णता से करने पर जीवात्मा की उन्नति होती है और कालान्तर में वह समाधि को प्राप्त कर सकता है। सन्ध्या के समर्पण मन्त्र में योग में उन्नति की पराकाष्ठा विषयक प्रार्थना करते हुए ध्याता वा उपासक ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि 'हे दयावान ईश्वर आपकी कृपा से हम सन्ध्या, जप व उपासना आदि कार्यों को करते हुए धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष की सिद्धि को आज ही प्राप्त होंवे।'

योग साधना ईश्वर का साक्षात्कार करने के साधनों व विधि का श्रद्धापूर्वक आचरण करने को कहते हैं। इसका पूर्णता से प्रकाश ऋषि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थों में किया है। पंचमहायज्ञ विधि में लिखे शब्दों को प्रस्तुत कर हम इस लेख को विराम देते हैं। वह लिखते हैं कि '(सन्ध्योपासना हेतु मनुष्य को चाहिये कि वह) एकान्त देश में आत्मा, मन और शरीर को शुद्ध शान्त करके, उस-उस कर्म में चित्त को लगा के, तत्पर होना चाहिए। इन नित्यकर्मों के फल ये हैं कि ज्ञानप्राप्ति से आत्मा की उन्नति और आरोग्यता होने से, शरीर के सुख से व्यवहार और परमार्थ कार्यों की सिद्धि होना। इससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये सिद्ध होते हैं (यही योग साधना के अन्तिम उद्देश्य वा फल हैं)। इनको प्राप्त होकर मनुष्यों का सुखी होना उचित है।'



सर्वोच्च फुटबल
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसभा सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मणिपूर: खेलों में उभरती भारत की शक्ति



रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

भारत का उत्तर पूर्वी राज्य मणिपूर अपने प्राकृतिक खूबी के लिए हर भारतीय के लिए आँखों का तारा बना रहा है। लेकिन आज हम मणिपूर की प्राकृतिक खूबी की चर्चा नहीं करेंगे बल्की विश्वपटल के खेल परिदृश्य में इसके अद्भूत क्षमता और योगदान के बारे में चर्चा करेंगे। मणिपूर खिलाड़ियों ने इस बार के ओलम्पिक में और पूर्व के ओलम्पिक में जिस प्रकार उल्लेखनीय योगदान दिया है उसके बारे में बताना लाजमी बन पड़ता है। आखिर क्यों मणिपूरी खिलाड़ी वह चाहे एम.सी.मैरीकॉम हो या मीराबाई चानू या अन्य हॉकी खिलाड़ी या कोई फुटबल खिलाड़ी क्यों ओलम्पिक के सफर में अमिट छाप छोड़ जाते हैं। आखिर क्या बात है कि पंजाब, हरियाणा, झारखंड आदि देश की राज्यों की तरह यह छोटा सा राज्य भी अब अपनी उपलब्धि खेल जगत के विश्व मंच पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा है।

मणिपूर में स्पोर्ट्स संस्कृति कई वर्षों से फल फूल रही है। मणिपूर के युवा खेल करियर में अपना सर्वस्व देने के लिए तैयार बैठे रहते हैं। वहाँ के कई भूतपूर्व ओलम्पियन या राष्ट्रीय-अन्तराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़ी मणिपूर में स्पोर्ट्स क्लब वर्षों से चलाते आ रहे जिसमें प्रशिक्षु मणिपूरी खिलाड़ियों की संख्या बढ़ती जा रही है।

इसमें बाक्सिंग, हॉकी, फुटबॉल, वेटलिफ्टिंग सभी प्रकार के खेलों की ट्रेनिंग उपलब्ध करायी जाती है। खेल के आवश्यक उपकरण, खेल गुरुओं के प्रशिक्षण, क्षमता विकसित करने के लिए अच्छी डाइट सभी कुछ का प्रशिक्षण दिया जाता है। मणिपूर में तो मल्टीप्लेक्स और मॉल से अधिक संख्या स्पोर्ट्स क्लब की है। भारत के कई युवा का मनोरंजन का साधन मूवी, क्रिकेट, संगीत, नृत्य, कला आदि होता है वहीं मणिपूर में मनोरंजन का मुख्य साधन खेल कूद है। अगर कहीं भी खेल प्रतियोगिता होता है तो समझिए की वहाँ मणिपूरीयों का हूजूम चला आता है। इस प्रकार से मणिपूरीयों की खेल के प्रति प्रेम की गहराई का अंदाजा लगाया जा सकता है। इसलिए आज विश्व पटल पर मणिपूरी खिलाड़ी अपना लोहा मनवा रहे हैं।

मणिपूर में साक्षरता दर कई राज्यों से बेहतर है। फिर भी यहाँ बेरोजगारी और गरीबी अधिक है। इससे बाहर निकलने के लिए भी मणिपूरी लोग खेल-कूद में अपना करियर चुनते हैं। खेल-कूद में जीतोड़ श्रम करके अपना खेल करियर को आगे बढ़ाते हैं। मणिपूर में कोई उद्योग क्रान्ति नहीं हुई है और रोजगार के अवसर भी सर्वसुलभ नहीं है। फलतः तगड़े कदकाठी और अदम्य साहस के मणिपूरी लोग खेलों में अपना जीवन लगा देते हैं।



मणिपूर के लोगों की कद काठी भी उसे खेल जगत में सितारा की तरह चमकने में भरपूर मदद पहुंचाती है। किसी भी खेल में यह कद काठी मणिपूरी लोगों को भरपूर मदद करती है। इनके कद काठी की एक विशेषता होती है। 'लो सेन्टर ऑफ ग्रेविटी' जो अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के भी खिलाड़ी में मौजूद रहती है। माना जाता है कि मोरा बाई चानू के वेटलिफ्टिंग में इसी 'लो सेन्टर ऑफ ग्रेविटी' का भी योगदान है। वहाँ की महिलाओं की कद काठी 'लो सेन्टर ऑफ ग्रेविटी' से भरपूर रहती है तभी तो वेटलिफ्टिंग, हॉकी तथा फुटबॉल जैसे खेलों में मणिपूरी खिलाड़ियों की संख्या बढ़ रही है। चाइना देश के कई खिलाड़ी में 'लो सेन्टर ऑफ ग्रेविटी' खूबी पाई जाती है। इसी तरह अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त लियोन मेस्सी (फुटबॉलर) में भी 'लो सेन्टर ऑफ ग्रेविटी' की खूबी देखने को मिलती है।

मणिपूर का संघर्षशील इतिहास भी मणिपूरी लोगों में स्फूर्ति सदियों से प्रदान करता आ रहा है। मणिपूर में प्राचीन समय में राजशाही व्यवस्था में एक ललूप नामक

अव्यवस्था थी जिसमें सत्रह से साठ साल तक के मणिपूरी लोगों का राजा की सेवा में आवश्यक सेवा देनी पड़ती थी। जब अंग्रेज भारत आए तो उन्होंने वहाँ की इस व्यवस्था को मजदूर कानून में बदलना चाहा जिसका जन्म कर मणिपूरी लोगों ने विरोध किया था और इसके विरोध में आंदोलन भी चलाया था। इस तरह ललूप व्यवस्था का महत्व मणिपूरी लोगों के लिए कितना अधिक था समझा जा सकता है। सत्रह से साठ साल तक के मणिपूरी लोग राजा के लिए कई युद्ध भी लड़े। इस तरह मणिपूरी में उद्यमता पूर्व समय से ही चली आ रही है।

मणिपूरी का खास तरह का खान पान भी इनको खेल-जगत में उल्लेखनीय योगदान देने के लिए आवश्यक यफलता प्रदान करती है। आम भारतीय की तरह मणिपूरी मसालेदार और तली-भूनी खानों में रूचि नहीं दिखाते हैं। ये लोग उबला हुआ खाना और पत्तेदार सब्जी खूब खाते हैं। इसे इनके शरीर में बे-फिजूल की चर्बी नहीं रहती है। फलतः खेल कूद में अच्छा प्रदर्शन करने के लिए भरपूर स्फूर्ति और उर्जा मिलती है।





सर्वोच्च कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सर्वानिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



अजनबी स्थान में एक अनोखा सफर



श्रीमती सुस्मिता बिश्वास
सहायक पर्यवेक्षक

साल 2020 के जनवरी में हमलोग कम्बोडिया और वियेतनाम घूमने गये थे। कम्बोडिया का आंकोरवाट मंदिर विश्व का सबसे बड़ा हिंदू मंदिर है। कहीं एक समय भारतीय शिल्पकीर्ति कितना दूर तक उन्नत और विस्तृत था, यह मंदिर देख के धोड़ा अंदाजा लगा सकते हैं। आज हम उसके बारे में चर्चा नहीं करेंगे।



आंकोरवाट मंदिर

आज बात करेंगे वियेतनाम के एक मशहूर जलप्रपात के बारे में। इसका नाम है 'बान गियक' (BAN GIOC) जलप्रपात। 10 दिन का सफर था हमारा, जो दोस्त लोग गये थे हमारे साथ, सभी लोग वापस चले आये सफर खतम करके, पर मैं रुक गयी। थोड़ी जानकारी थी इस जलप्रपात के बारे में। सोचा था इतना दूर आ ही गये तो इसके साथ कुछ समय बीता कर जाना चाहिये। सिर्फ यह एक जलप्रपात देखने के लिये हमको आने जाने में 770 किलोमीटर रास्ता चलना पड़ा। सफर के दसवां दिन सुबह वियेतनाम की राजधानी हैनॉय शहर को घूमके देखा सबके साथ, फिर दोपहर का खाना खाकर सबसे विदा लेकर अपने पति के साथ मैं एक छोटी गाड़ी में बैठ कर 'बान गियक' के सबसे नजदिकी शहर 'काओ बांग' की ओर चल पड़ी। हमलोग जब 'काओ बांग' (cao-bang) पहुँचे तब रात के 9.30 बजे रहे थे। यूँ तो रात 9.30 बजे कुछ भी

बान गियक



सर्वोच्च कुटुम्बकम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसिंहास्यं सर्वानिच्छा
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

नहीं है, पर वह जगह हमारे लिए बिल्कुल अजनबी थी। एक तो विदेश है, और सबसे बड़ा समस्या है भाषा की। हमें एक भी आदमी नहीं मिला जो अंग्रेजी समझ सके। 'काओ बांग' में हमारा कोई होटल बुकिंग नहीं था। बहुत कोशिश करने के बाद एक होटल मिला। गुगल के सहारे अंग्रेजी को वियेतनामी में अनुवाद करके बाताचित करना पड़ रहा था।

अगले दिन सुबह हम 'बा-बे' (Ba-Be) की ओर निकल पड़े। इसी गाँव में वह जलप्रपात है। लग भग दो घंटे का रास्ता है। बीच में एक अदभूत गुफा आता है, जिसका नाम है 'Dong Ngnom Ngao'। यहाँ गुफे के अंदर Stalactite और Stalagmite की इतनी सुंदर सुंदर डिजाइन बन गया है जैसे प्रकृति ने खुद अपने हाथों से यह शिल्पकला रचा हो। पर यह गुफा उस दिन पर्याटकों के लिए बंद था। कोई पहरेदार भी नहीं था। हमने थोड़ी गलती कर दी। ड्राइवर भाई के सहायता ले कर किसी तरह गुफे के अंदर प्रवेश कर लिया। अंदर जाकर समझ में आया प्राकृतिक गुफा असल में कैसा होता है। गुफा के अंदर हम उतनी दूर ही देख सकते थे जितनी दूर मोबाईल के टार्च की रोशनी पहुंचती थी। उसके आगे गहन अंधकार फैला था जिसे चाहे तो चाकु की धार से काट सकें। गुफे के अंदर से पानी का आवाज आ रहा था, लगता है कोई सोता बह रहा हो। ज्यादा दूर तक जाने की हिम्मत नहीं जुटा पायी, कहीं गिर गये तो किसी को पता भी नहीं चलेगा। वहाँ से तुरंत निकल कर हमलोग 'वान गियक' प्रपात के पास गये। यह बिल्कुल चीन और वियतनाम सीमान्त पर स्थित है। प्रपात के एक तरफ वियतनाम है और दूसरी तरफ चीन है। इस प्रपात की सुंदरता के बारे में कुछ कहने के लिए शब्द नहीं है मेरे पास। उपर से एक एक कदम यह जलप्रपात ऐसे उतरती है ज्यों की कोई बालिका नृत्य में तल्लीन हो सीढ़ियों से उतर रही हो। जब हमारी नाव इसके एकदम करीब पहुंची तो पानी की फुहारें धुएँ की तरह फैल

कर हमें भिगों रही थी। देखते देखते कब सूरज ढल गया, कब अंधेरा होने लगा पता ही नहीं चला। गाँव देखने का कोई मौका नहीं मिला। अंधेरे में होटल ढूँढना पड़ा। फिर वही भाषा की समस्या। बुकिंग से होम स्टे बुक गए किए थे। गुगल के सहारे गाँववालों से बहुत पुछताछ करने के बाद वो मिला। छोटा, साधारण पर बहुत अच्छा होम स्टे था। रात में बहुत अच्छा स्थानीय खाना मिला, जिसमें चावल और रोटी तो था पर उसके पकाने की विधि बिल्कुल अलग है। चिकन भी हमारे जैसा नहीं था। जो भी हो, रात बहुत अच्छी गुजरी। अगले दिन सुबह घर से निकलते ही मन प्रफुल्लित हो गया। चारों ओर कितना सुंदर खेत हैं। कुछ दूर पर एक सरोवर दिख रहा है। गाँव के ही नाम से नाम है 'बा-बे लेक'।

होम स्टे के मालिक ने बताया की अगर देख कर नहीं गये तो वाद में अफसोस होगा। हम सोच में पड़ गये क्योंकि उसी दिन शाम को हैनॉय से हमारी कोलकाता की फ्लाइट थी। बा-बे से हैनॉय आठ घंटे का रास्ता था। पर दिल नहीं माना और हम चले गये एक किलोमीटर दूर उस सरोवर के पास। नाव में हम एक घंटे तक घूमते रहे। इतना सुंदर था वह सफर कि सोच रहे थे अगर नहीं जाते तो एक सुंदर अनुभव छूट जाता। विशाल उस सरोवर में कहीं कहीं छोटा छोटा पहाड़ सिर उठाके खड़ा था। धुंध इतना ज्यादा है कि उस पार कुछ दिखाई नहीं दे रहा था। एक रहस्य सा फैला रहा था चारों ओर। उस एक घंटे की स्मृति मन में ताजिंदगी रह जाएगी।

उसके बाद लौटने का समय आ गया। गाड़ी खूब तेज चला कर सात घंटे में ही हैनॉय पहुंच गये। फिर कोलकाता का विमान में बैठ कर हम एक अनोख अनुभव के साथ लौट आए विदेश से। हम पति पत्नी का यह दो दिनों का अजनबी सफर हमारे लिए यादगार बन गया।

बा-बे

ऑनलाइन कक्षाओं का बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव



गार्गी मंडल
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

एक बच्चे के चरित्र तथा भविष्य के निर्माण में विद्यालय की एक अहम भूमिका होती है। विद्यालय न सिर्फ बच्चों को ज्ञान प्रदान करने का माध्यम है, बल्कि बच्चों की मानसिक तथा शारीरिक विकास में भी विद्यालय का योगदान अतुलनीय है। कोरोना वैश्विक महामारी की शुरुआत के साथ ही हम सभी अपने-अपने घरों में कैद हो गये हैं जिससे एक ओर हमारी मानसिक, आर्थिक और सामाजिक स्तरों पर प्रभाव पड़ा है वहीं दूसरी ओर इससे बच्चे सबसे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। बच्चों की तो जैसे दुनिया ही बदल गई है।

इस वैश्विक महामारी की वजह से सभी विद्यालय बंद कर दिये गये। परिणामस्वरूप शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही तेजी से परिवर्तन हुआ। विद्यालयों ने डिजिटल माध्यम से बच्चों को शिक्षा देने का उपाय निकाला, जिसमें ऑनलाइन कक्षाओं की प्रधान भूमिका है।

उपकरण जैसे डेस्कटॉप, लैपटॉप, टैब, मोबाइल एवं इंटरनेट की सुविधा हर स्कूल जाते बच्चों के पास न

होने की वजह से ऑनलाइन शिक्षा की सार्थकता पर स्वयं सवाल उठ रहे हैं। केवल वे बच्चे ही ऑनलाइन कक्षाओं का फायदा उठा सकते हैं जिनके पास उपकरण एवं इंटरनेट दोनों उपलब्ध है।

ऑनलाइन पढ़ाई के दौरान घर में बच्चों को स्क्रीन पर घंटों बैठना पड़ रहा है जिससे बच्चों को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। नेत्र विशेषज्ञों का मानना है कि छोटे स्क्रीन एवं रेडिएशन ज्यादा होने के कारण मोबाइल पर पढ़ाई करना आँखों के लिए बेहद नुकसानदेह है। डेस्कटॉप या लैपटॉप पर पढ़ाई की जा सकती है। परन्तु इसमें भी आँखों को आराम देना आवश्यक है। लगातार स्क्रीन पर देखने से आँखों से पानी बहना शुरू हो सकता है और नजर भी कमजोर पड़ सकती है।

स्कूल के माहौल में बच्चे सहपाठियों के साथ बैठकर पढ़ाई तथा खेल-कूद करते हैं। वे अपना खाना सबके साथ सहभाजन कर खाना सीखते हैं। इस तरह



बच्चे एक दूसरे के सम्पर्क में आकर विभिन्न सामाजिक व्यवहार सीखते हैं। परन्तु ऑनलाइन कक्षाओं में वे घर में अकेले बैठकर पढ़ाई करते हैं जिससे उन में बोरियत पैदा हो रही है। पढ़ाई को लेकर बच्चों में पहले जैसा उत्साह नहीं है। प्रतिस्पर्धा की भावना भी कम होती जा रही है। इससे बच्चों में चिड़चिड़ापन पनप रहा है।

ऑनलाइन कक्षाओं में शिक्षक के लिए भी हर एक बच्चे पर ध्यान दे पाना सम्भव नहीं होता जिससे शिक्षक एवं बच्चों में संचार के अभाव की वजह से दूरी बनी रहती है। ऑनलाइन पढ़ाई में छात्रों की प्रतिक्रिया भी सीमित रहती है। ऑनलाइन कक्षाओं के दौरान बच्चों में आत्मविश्वास की कमी मिलती है जो केवल स्कूल के वातावरण में ही विकसित होती है। ऑनलाइन कक्षाओं के कारण बच्चों में अवसाद एवं खिन्नता के लक्षण प्रकट हो रहे हैं। जिस तरह मोबाइल आने से हमें नम्बर याद होना बंद हो गया है, उसी तरह ऑनलाइन पढ़ाई से बच्चों की स्मरण-शक्ति भी कम हो रही है क्योंकि बच्चे हर चीज़ कंप्यूटर में सेव कर लेते हैं।

स्कूल में बच्चों को न केवल ज्ञान और शिक्षा दी जाती है, साथ ही साथ अनुशासन, व्यवहारिक रवैया, शिष्टाचार इत्यादी भी सिखाया जाता है जिससे बच्चे का संपूर्ण विकास होता है। उच्च कक्षाओं के बच्चे ऑनलाइन पढ़ाई स्वयं कर सकते हैं परन्तु छोटी उम्र के बच्चों की ऑनलाइन कक्षाओं के लिए उनके अभिभावकों को विशेष रूप से सजग रहने की जरूरत है। इस अवस्था में बच्चों को संतुलित आहार देना भी बहुत जरूरी है।

ऑनलाइन पढ़ाई में कई व्यावहारिक दिक्कतें हैं लेकिन इस वैश्विक महामारी में जब स्कूल खोलना खतरे से खाली नहीं है, ऐसे में ऑनलाइन कक्षाएँ ही बड़ा सहारा हैं। कोविड 19 के समय में ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों तथा शिक्षकों को एक साथ जोड़े रखा है और शिक्षा का आदान-प्रदान नहीं रूका है। शिक्षा को संचारिक और गतिमान रखने का श्रेय सिर्फ ऑनलाइन कक्षाओं को ही दिया जा सकता है। बच्चे बिना किसी व्यवधान के अपनी पढ़ाई को सुचारू रूप से जारी रख सकते हैं। अतः इस बदले हुए परिदृश्य में शिक्षा का स्वरूप भी बदल गया है। मौजूदा हालात में स्कूलों के पास ऑनलाइन कक्षाओं के अलावा कोई विकल्प नहीं है। इस शिक्षा के बदले स्वरूप को हमें सकारात्मक ढंग से/ अपनाकर बच्चों को उन्नती और प्रगती की ओर अग्रोषित करना ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

(हिन्दी पखवाड़ा (2021-22) में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार।)



ऑनलाइन कक्षाओं का बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव



बिकाश कुमार दाँ
लेखापरीक्षक

हम भी पहले बच्चे ही थे। रोज सुबह उठकर स्कूल जाते, दोस्तों से बातें करते थे। शिक्षकों को देखकर ही सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी। हमारा ध्यान पढ़ाई से हटते ही शिक्षक भाँप लिया करते थे। स्कूल छुट्टी होते ही घर जाने की जल्दी हुआ करती थी। पूरे उत्साह और हर्षोल्लास के साथ दिन बीता करता था। पर आज समय बदल गया है। कुछ दिन पहले तक यह कहा जाता रहा है कि बच्चों को गैजेट्स (मोबाइल, लैपटॉप, टैबलेट, कंप्यूटर आदि) से दूर रखा जाना चाहिए। पर कोरोनाकाल में यह बात उलट सी गई है। आज बच्चे इन्हीं गैजेट्स पर ऑनलाइन क्लासेस कर रहे हैं; जिसके कारण उनके मन का खिलखिलाता बच्चा चिड़चिड़ेपन का शिकार हो गया है। दूसरी ओर कई बच्चों को इन गैजेट्स का लत भी लग गया है। डॉक्टरों के अनुसार एक दिन में कई घंटों तक चलने वाली ऑनलाइन पढ़ाई बच्चों के शारीरिक और मानसिक सेहत पर भारी पड़ रही है। छोटे बच्चे इससे सबसे ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं।

लगातार ऑनलाइन क्लासेस के समय ज्यादा देर तक स्क्रीन के सामने रहने के कारण बच्चों में कई बदलाव नजर आ रहे हैं जो उसके शारीरिक और मानसिक रूप से परेशानीजनक है। इसके कारण बच्चों में चिड़चिड़ापन, मूडी, जिद्दी, नखरे करने वाले तथा अपने कामों के प्रति लापरवाह होने की समस्या बढ़ती जा रही है। बच्चे आधे घंटे भी डिवाइस से दूर नहीं हो पा रहे हैं। ऑनलाइन क्लासेस से ब्रेक मिलने के बाद भी वे अपने गेमिंग में लग जाते हैं। फोन नहीं मिलने पर वे जौद करने तथा बेचैन सा होने लगते हैं। डॉक्टरों के अनुसार इस लत को नोमोफोबिया कहते हैं।

यदि किसी व्यक्ति के चेहरे पर लगातार दो घंटों तक मोबाइल की रोशनी पड़ती है तो उसके दिमाग में 22 फिसदी तक मेलाटीनिन (एक प्रकार का हार्मोन) कम होने की संभावना रहती है। इसके कमी से शरीर में नींद कम आने की समस्या पैदा होने लगती है। यानि अगर बच्चे ज्यादा देर तक मोबाइल या इन गैजेट्स के सामने रहते हैं

तो वे नींद नहीं आने की बीमारी से ग्रसित हो सकते हैं।

लगातार ऑनलाइन क्लासेस की स्थिति में बच्चों के पोश्चर यानि आकार में बदलाव की समस्या उत्पन्न होने लगी है तथा वे कम उम्र में ही कमर दर्द जैसी बीमारी का शिकार हो रहे हैं।अधिकतर देखा गया है कि बच्चे स्क्रीन देखते समय अपने कंधों तथा गर्दन को झुकाकर रखते हैं जिससे रीढ़ की हड्डी प्रभावित होती है। जिसके कारण कमर संबंधी, गर्दन के पास की रीढ़ की हड्डी के जोड़ों और डिस्क में समस्या आती ही है। मोटेपन का शिकार बच्चे हो रहे हैं। स्क्रीन देखते समय बच्चे अक्सर अपने आँखों को सिकोड़ लेते हैं। यह लक्षण आगे चलकर 'कम्प्यूटर विजन सिंड्रोम' में तब्दील हो सकती है। इसके कारण बच्चों में आँखें सूखने तथा धुँधला दिखने की समस्या होने लगती है जिससे आँखें कमजोर होने लगती हैं और हमेशा सिर दर्द की समस्या होने लगती है।

ऑनलाइन क्लासेस के समय ओडियो तेज नहीं होने के कारण बच्चों को सुनने में दिक्कत होने लगती है, इसलिए वे 'ईयरफोन' का इस्तेमाल करते हैं। पर ज्यादा देर तक 'ईयरफोन' का इस्तेमाल करने से उन्हें कान दर्द

तथा सिर दर्द होने लगती है। यही नहीं 'ईयरफोन' का इस्तेमाल लंबे समय तक करने से सुनने की क्षमता में भी समस्या होने लगती है जिससे आगे चलकर बच्चे बहरेपन का भी शिकार हो सकता है।

इन सबके अलावा 'ऑनलाइन पढ़ाई' से बच्चों में 'स्मृति शक्ति' का भी हास हो रहा है, क्योंकि बच्चे ऑनलाइन क्लासेस के दौरान हर चीज को मोबाइल या कम्प्यूटर में सेव कर ले रहे हैं। जिससे उनके रचनात्मक क्षमता पर प्रभाव पड़ रहा है तथा वे किसी चीज़ को याद नहीं रख (मेमोरीलॉस) पा रहे हैं। और सारी चीज़ें भूलने लग रहे हैं। अतः उनमें भूलने की बीमारी सामने आ रही है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'ऑनलाइन पढ़ाई' बच्चों की शारीरिक तथा मानसिक सेहत पर भारी पड़ रही है।

(हिन्दी पखवाड़ा (2021-22) के दौरान आयोजित निबंध प्रतियोगिता में द्वितीय पुरस्कार।)

ऑनलाइन कक्षाओं का बच्चों के स्वास्थ्य पर प्रभाव



रवि प्रभात
कनिष्ठ अनुवादक

परिचय- वर्ष 2019 में उपजा संकट, वर्ष 2020 के आरंभ में आते-आते पूरे विश्व को निगलने लगा। फलतः कई तरह की समस्याएँ उभरने लगीं। इस समस्या ने बच्चों की स्कूली शिक्षा पर भी प्रश्न खड़े करने लगे की बच्चों को इस कोरोना संकट में शिक्षा की व्यवस्था कैसी की जाए? अतः ऑनलाइन शिक्षा की व्यवस्था कोरोना संकट से उपजी समस्या से निपटने के लिए की गई ताकि बच्चों के शिक्षा पर कोई रुकावट नहीं आए।

ऑनलाइन शिक्षा वह शिक्षा व्यवस्था है जिसमें बच्चों को नेट के माध्यम से घर बैठे ही मोबाइल उपकरण या अन्य उपकरणों (जैसे लैपटॉप आदि) के माध्यम से शिक्षा दी जाती है। कोरोना संकट में यही व्यवस्था जारी है जिससे की बच्चों की स्कूली शिक्षा अबाध गति से जारी रहे।

विस्तार-ऑनलाइन शिक्षा ने अगर एक तरफ लाभ पहुंचाया है तो इस व्यवस्था से उपजी समस्या ने चिंता भी बढ़ा दिया है। ऑनलाइन शिक्षा बच्चों के स्वास्थ्य पर कुप्रभाव डाल रही है जिसने कई शारीरिक समस्या बच्चों के सामने लाकर खड़ी कर दी हैं।

आइए जाने ऑनलाइन शिक्षा ने बच्चों के स्वास्थ्य पर क्या क्या प्रभाव डाले हैं-

1. बच्चों की नेत्र शक्ति का कमजोर पड़ना- उपकरणों के माध्यम से निकलने वाली तरंगें (Waves) बच्चों के आँखों पर बुरा/प्रभाव छोड़ती है। ये तरंगें किसी भी दृष्टिकोण से बच्चों की आँखें के लिए उचित नहीं है। बच्चे ऑनलाइन कक्षाओं में घंटों मोबाइल स्क्रीन या लैपटॉप स्क्रीन के सामने बैठ कर कक्षा लेते हैं। फलतः स्क्रीन से निकलने वाली तरंगें बहुत बुरा असर इतने घंटों में कर देती हैं। बच्चों के आँखों से पानी निकलना, आँखों

के सामने धुंधलापन छाना, आँखों में दर्द आना, ये सभी समस्याएँ ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से बच्चों में देखी जा रही है। अतः ऑनलाइन शिक्षा का सबसे प्रमुख प्रभाव बच्चों की आँखों पर पड़ा है।

2. बच्चों को पीठ दर्द या रीढ़ में दर्द, बच्चों में दूसरी समस्या जो देखने को मिल रही है, वह है उनका पीठ दर्द होना या रीढ़ में दर्द होना। ऑनलाइन शिक्षा घंटों तक चलती है। स्कूली शिक्षा की तरह बच्चे बीच बीच में ब्रेक नहीं ले पाते हैं। दूसरी तरफ वह कक्षाओं के मध्य में खेल भी नहीं पाते हैं। फलतः इसका घातक परिणाम सामने निकल कर आ रहा है। बच्चों में पीठ की समस्या तथा रीढ़ को समस्या उभरती जा रही है। छोटे बच्चे पीठ दर्द तथा रीढ़ का दर्द झेलने लगे। खेलने कूदने की उम्र में बच्चों को बड़ों जैसी समस्या घर करने लगी है। अतः बच्चों को ऐसी शारीरिक समस्या से निजात मिलना ही चाहिए, अन्यथा



भविष्य में बच्चे अपने करियर बनाने में समय देने के बजाए अस्पतालों के चक्कर लगाने में ही समय बर्बाद कर देंगे।

3. बच्चों में घटती एकाग्रता-

आँख दद और पीठ दर्द के अलावा बच्चों में एकाग्रता की कमी भी देखने को मिल रही है। ऑनलाइन शिक्षा से बच्चों में एकाग्रता घट रही है क्योंकि मोबाइल या लैपटॉप जैसे उपकरणों से निकलने वाली तरंगें बच्चों के बुद्धि विकास को रोकती हैं। ये तरंगें बहुत ही हानिकारक होती हैं जिससे बच्चों में नॉंद न आना, सिर दर्द आदि समस्याएँ भी दिन पर दिन उपज रही हैं। बच्चों में चिड़चिड़ापन भी इसी वजह से बढ़ने लगा है। अतः ऑनलाइन शिक्षा तरह तरह के मानसिक विकार पैदा कर रही हैं जिससे बच्चों की एकाग्रता घटती जा रही है।

4. शारीरिक श्रम के अभाव में सक्रियता की कमी

ऑनलाइन शिक्षा में कक्षाएँ घंटों तक चलती हैं। फलतः स्कूली व्यवस्था की तरह बच्चे खेल-कूद नहीं कर पाते हैं। खेल-कूद बच्चों के स्वास्थ्य के लिए रामबाण है। परन्तु ऑनलाइन शिक्षा में बीच बीच में खेल-कूद असंभव है। अतः बच्चे सिर्फ विषय से सम्बंधित शिक्षा ले पाते हैं और कोई सक्रियता नहीं होती है। वह न तो खेल पाते हैं न ही कोई परियोजना तैयार कर पाते हैं न ही कोई सामाजिक कार्य कर पाते हैं। फलतः किसी भी प्रकार का शारीरिक उद्यम नहीं हो पाता है। इस समस्या ने बच्चों में शिथिलता ला दी है। बच्चों पहले की तरह सक्रिय नहीं रहते हैं।

5. जिज्ञासा का अभाव-

ऑनलाइन शिक्षा में बच्चे अपने शिक्षकों से विषय आधारित प्रश्न स्कूली शिक्षा की तरह नहीं कर पाते हैं। इसका मुख्य कारण होता नेट का कमजोर पड़ना, शिक्षक की जागरूकता में कमी, स्कूली कक्षा जैसा वातावरण का अभाव। फलतः बच्चों में अपने विषय को लेकर जिज्ञासा की कमी हो रही है। इससे बच्चों में अपने विषय का ज्ञान घटता चला जाएगा। बच्चों में अगर जिज्ञासा और उत्साह का अभाव रहेगा तो यह बच्चों के स्वास्थ्य के लिए अनर्घत है।

6. सामाजिक सरोकारता का अभाव-

स्कूली प्रणाली में बच्चों में सहभागिता होती है। बच्चों अपने में शेयर करते हैं। खाना-पीना, खेलना कूदना, चीजें आपस में बाँटना आदि होता है। इससे बच्चों में समग्र विकास होता है। परन्तु ऑनलाइन शिक्षा के माध्यम से बच्चे एकान्तवास जीवन जीने को मजबूर हैं। फलतः यह उनके स्वास्थ्य के लिए अनुकूल नहीं है। उपसंहार-शिक्षा को इस प्रणाली ने बच्चों में बहुत अधिक शारीरिक और मानसिक समस्या खड़ी की हैं। अतः इस पर नियंत्रण आवश्यक है। स्कूली शिक्षा अति उत्तम है। उससे बच्चों का समस्त विकास होता है। अतः ऑनलाइन शिक्षा को अनवरत रूप से जारी नहीं रखना चाहिए।

(हिन्दी पखवाड़ा (2021-22) में आयोजित निबंध प्रतियोगिता में तृतीय पुरस्कार।)



एक ही पृथ्वी - एक ही परिवार - एक ही भविष्य
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आजादी का अमृत महोत्सव



राय बहादुर सिंह
सहायक पर्यवेक्षक

आजादी का अमृत महोत्सव भारत के प्रधानमंत्री द्वारा दिनांक 12 मार्च 2021 को गुजरात के साबरमती आश्रम से प्रारम्भ किया गया था। यह महोत्सव 75 सप्ताह तक मनाया जाएगा जो 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगा। इस महोत्सव के माध्यम से भारत के लोगों का इतिहास, संस्कृति और आजादी के बाद देश द्वारा अर्जित की गयी उपलब्धियों से अवगत कराया जाएगा। इस महोत्सव के माध्यम से देश में सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान से भी अवगत कराया जाएगा।

12 मार्च 1930 को महात्मा गांधी द्वारा आत्मनिर्भर और आत्मसम्मान के लिए साबरमती आश्रम से दांडी यात्रा शुरू किया गया था और अंग्रेजी शासन को चुनौती दी थी। इसी महत्व को देखते हुये आजादी के अमृत महोत्सव का शुभारंभ साबरमती आश्रम से किया गया। भारत क्षेत्रफल की दृष्टि से 7वां और जनसंख्या की दृष्टि से दूसरा सबसे बड़ा देश है। हमारा देश का लोकतन्त्र सबसे समृद्ध है। इस महोत्सव को सफल के लिए हर तरफ से प्रयास किए जा रहे हैं। सरकार विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम, प्रतियोगिताएं, प्रदर्शनी इत्यादि आयोजित की जा रही हैं।

नमक उस समय भारत की आत्मनिर्भरता का प्रतीक था जब गांधी जी ने दांडी की यात्रा की और नमक कानून को तोड़ा। अंग्रेजों ने भारत की इस आत्मनिर्भरता को खत्म करने का प्रयास करने के साथ-साथ उसके मूल्यों पर प्रहार भी किया था। उस समय भारत के लोगों को इंग्लैंड से आने वाले नमक पर निर्भर रहना पड़ता था। गांधी जी ने देश के इस पुराने दर्द को समझा और जनता से जुड़ी इस नब्ज को पकड़ने में सफल रहे। यह आंदोलन हर भारतीय का संकल्प बनने में सफल रहा, क्योंकि हमारे देश में नमक को एक प्रकार से वफादारी का प्रतीक भी माना जाता है। आज भी हम कहते हैं कि हमने देश का नमक खाया है। इसलिए नहीं कि नमक बहुत कीमती चीज है। बल्कि ऐसा इसलिए है क्योंकि नमक हमारे लिए श्रम और समानता का प्रतीक है।

भारत को विश्व अर्थव्यवस्था में एक शक्ति माना जाता है। भारत में युवाओं की संख्या बहुत अधिक है जो अपनी काबिलियत से लगातार उन्नति और सफलता के परचम लहरा रहे हैं और देश के विकास में सहयोग कर रहे, लेकिन भारत ने एक बुरी अर्थव्यवस्था का दौर भी देखा है

75
Azadi Ka
Amrit Mahotsav





समूह एक परिवार, एक भविष्य
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आजादी का
अमृत महोत्सव

जब आजादी के बाद भारत को बंटवारा झेलना पड़ा, और भारत को चीन के साथ युद्ध करना पड़ा। उस समय के बाद भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह से टूट चुकी थी लेकिन फिर भी लगातार प्रयास के बाद और देश प्रेम के दम पर भारत आज एक बड़ी अर्थव्यवस्था और हर क्षेत्र में विकास वाला देश बन गया है।

आज भारत एक परमाणु शक्ति होने के साथ ही बड़ी सैन्य शक्ति भी है। यही नहीं चांद और मंगल पर मानव रहित मिशन भेजने वाले 5 देशों की सूची में भारत का भी नाम शामिल है जो कि हर भारतवासी के लिए गर्व की बात है। साथ ही भारत ही एकमात्र ऐसा देश है जिसने बहुत कम खर्चों में मंगल मिशन को पहली बार में ही सफल बनाया। बात की जाए उत्पादन की तो इस मामले में भी भारत ने कई देशों को पीछे छोड़ दिया है।

वर्तमान समय में जो युवा पीढ़ी है जिनकी उम्र 18 से 35 वर्ष के बीच में है वह आजादी के संघर्ष और लोकतंत्र के महत्व को बेहतर ढंग से नहीं जानती हैं। कई विचारधाराओं में बंटी यह पीढ़ी गुमराही के एक चौराहे पर खड़ी है। ऐसे में उसे अपने देश के इतिहास और वर्तमान से जोड़ना जरूरी है। कहते हैं कि जो देश अपना इतिहास भूल जाता है उसका भूगोल भी बदल जाता है और यह हुआ भी है।

कई कुर्बानियां व्यर्थ चली गईं तब जबकि देश का विभाजन हुआ।

आजादी का महोत्सव किसी विशेष जाति, धर्म अथवा राज्य नहीं बल्कि संपूर्ण भारत के लिए महत्वपूर्ण है। इस राष्ट्रीय महोत्सव के दौरान सभी सरकारी भवन और घरों पर तिरंगा फहराया जाएगा और कुछ जगहों पर रैलियां भी निकाली जाएंगी ताकि इसका महत्व लोगों तक पहुंचया जा सके। स्कूल के बच्चे सांस्कृतिक कार्यक्रमों में हिस्सा लेकर अपनी कला के माध्यम से आजादी का महोत्सव मनाएंगे। इसके लिए स्कूलों में अच्छे से तैयारी चल रही है। बच्चों को आजादी के संघर्ष की कहानियां बताई जा रही है।

इस प्रकार आजादी का अमृत महोत्सव देश लोगों को संस्कृतियों और विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से आपस में जोड़ना है। इसके साथ ही देश की विविधता में एकता से परिचय करना है। भाषाओं के मामले में हमारा देश विश्व में सबसे समृद्ध है। हमारे संविधान की 8वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को स्थान दिया गया है। इतनी विविधताओं के बाद में पूरे देश का एकजुट रहना और रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है और इन्हीं संदेशों को जन-जन तक ले जाने के लिए आजादी का अमृत महोत्सव पूरे देश में मनाया जा रहा है।





सर्वोप कृतमन्वन्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसभाय सार्थानुया
Dedicated to Truth in Public Interest



महादेवी वर्मा – नारी हृदय की रचनाकार



भावना कुमारी
पत्नी: राजीव रंजन
हिन्दी अधिकारी

महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को फ़र्रुखाबाद उत्तर प्रदेश, भारत में हुआ था। उनके परिवार में लगभग 200 वर्षों या सात पीढ़ियों के बाद पहली बार पुत्री का जन्म हुआ था। अतः बाबा बाबू बाँके विहारी जी हर्ष से झूम उठे और इन्हें घर की देवी — महादेवी मानते हुए अपनी पौत्री का नाम महादेवी रखा। उनके पिता श्री गोविंद प्रसाद वर्मा भागलपुर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। उनकी माता का नाम हेमरानी देवी था।

उनके लेखन की भाषा शैली संस्कृतनिष्ठ खड़ी बोली है। यह सत्य है कि महादेवी वर्मा का काव्य संसार छायावाद की परिधि में आता है, पर उनके काव्य को उनके युग से एकदम अलग कर के देखना उनके साथ अन्याय करना होगा। महादेवी वर्मा एक सजग रचनाकार थीं। बंगाल के अकाल के समय वर्ष 1943 में इन्होंने एक काव्य संकलन प्रकाशित किया था और बंगाल से संबंधित 'बंग भू शत वंदना' नामक कविता भी लिखी थी। वर्ष 1962 में चीन द्वारा भारत पर आक्रमण के प्रतिवाद में हिमालय नामक काव्य संग्रह का सम्पादन किया था। ये संकलन

उनके राजनैतिक दर्शन, चिंतन और युगबोध का परिचायक है। उन्हें वर्ष 1956 में भारत सरकार द्वारा पद्म विभूषण उपाधि से सम्मानित किया गया। मुझे आशा ही नहीं वरन पूर्ण विश्वास भी है कि कवयित्री महादेवी वर्मा से तो साहित्य में रुचि न रखने वाले लोग भी परिचित होंगे।

महादेवी वर्मा हिन्दी की सर्वाधिक प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक थीं। वे हिन्दी साहित्य में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तम्भों में से एक मानी जाती हैं। आधुनिक हिन्दी की सबसे सशक्त कवयित्रियों में से एक होने के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। कवि निराला ने उन्हें "हिन्दी के विशाल मन्दिर की सरस्वती" भी कहा है। महादेवी ने स्वतन्त्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके वाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रुदन को देखा, परखा और करुण होकर अन्धकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की। न केवल उनका काव्य बल्कि उनके समाजसुधार के कार्य और महिलाओं के प्रति चेतना भावना भी इस दृष्टि से



संयुक्त कुटुम्ब
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसभा सचिवालय
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

प्रभावित रहे। उन्होंने मन की पीड़ा को इतने स्नेह और शृंगार से सजाया कि दीपशिखा में वह जन-जन की पीड़ा के रूप में स्थापित हुई और उसने केवल पाठकों को ही नहीं समीक्षकों को भी गहराई तक प्रभावित किया। उन्होंने खड़ी बोली हिन्दी की कविता में उस कोमल शब्दावली का विकास किया जो अभी तक केवल बृजभाषा में ही संभव मानी जाती थी। इसके लिए उन्होंने अपने समय के अनुकूल संस्कृत और बांग्ला के कोमल शब्दों को चुनकर हिन्दी का जामा पहनाया। संगीत की मर्मज्ञ होने के कारण उनके गीतों का नाद-सौंदर्य और पैनी उक्तियों की व्यंजना शैली अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने अध्यापन से अपने कार्यजीवन की शुरुआत की और अन्तिम समय तक वे प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधानाचार्या बनी रहीं। उनका बाल-विवाह हुआ था परन्तु उन्होंने अविवाहित की भाँति जीवन-यापन किया। प्रतिभावान कवयित्री और गद्य लेखिका महादेवी वर्मा साहित्य और संगीत में निपुण होने के साथ-साथ कुशल चित्रकार और सृजनात्मक अनुवादक भी थीं। उन्हें हिन्दी साहित्य के सभी महत्त्वपूर्ण पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त है। भारत के साहित्य आकाश में महादेवी वर्मा का नाम ध्रुव तारे की भाँति प्रकाशमान है। गत शताब्दी की सर्वाधिक लोकप्रिय महिला साहित्यकार के रूप में वे जीवन भर पूजनीय बनी रहीं। वर्ष 2007 उनके जन्म शताब्दी के रूप में मनाया गया। 27 अप्रैल 1982 को भारतीय साहित्य में अतुलनीय योगदान के लिए ज्ञानपीठ पुरस्कार से उन्हें सम्मानित किया गया था।

महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई साथ ही संस्कृत, अंग्रेजी, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह जैसी बाधा पड़ जाने के कारण कुछ दिन शिक्षा स्थगित रही। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रास्टविथ कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगीं। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रान्त भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवयित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन होने लगा था। कालेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहती – “सुनो, ये कविता भी लिखती हैं”। 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए.पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह नीहार तथा रश्मि प्रकाशित हो चुके थे।

सन् 1916 में उनके बाबा श्री बाँके विहारी ने इनका विवाह श्री स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया, जो उस समय दसवीं कक्षा के विद्यार्थी थे। श्री वर्मा इण्टर करके लखनऊ मेडिकल कॉलेज में बोर्डिंग हाउस में रहने लगे। महादेवी जी





समृद्धि कृतकल्पन
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसभा सचिवालय
Dedicated to Truth in Public Interest

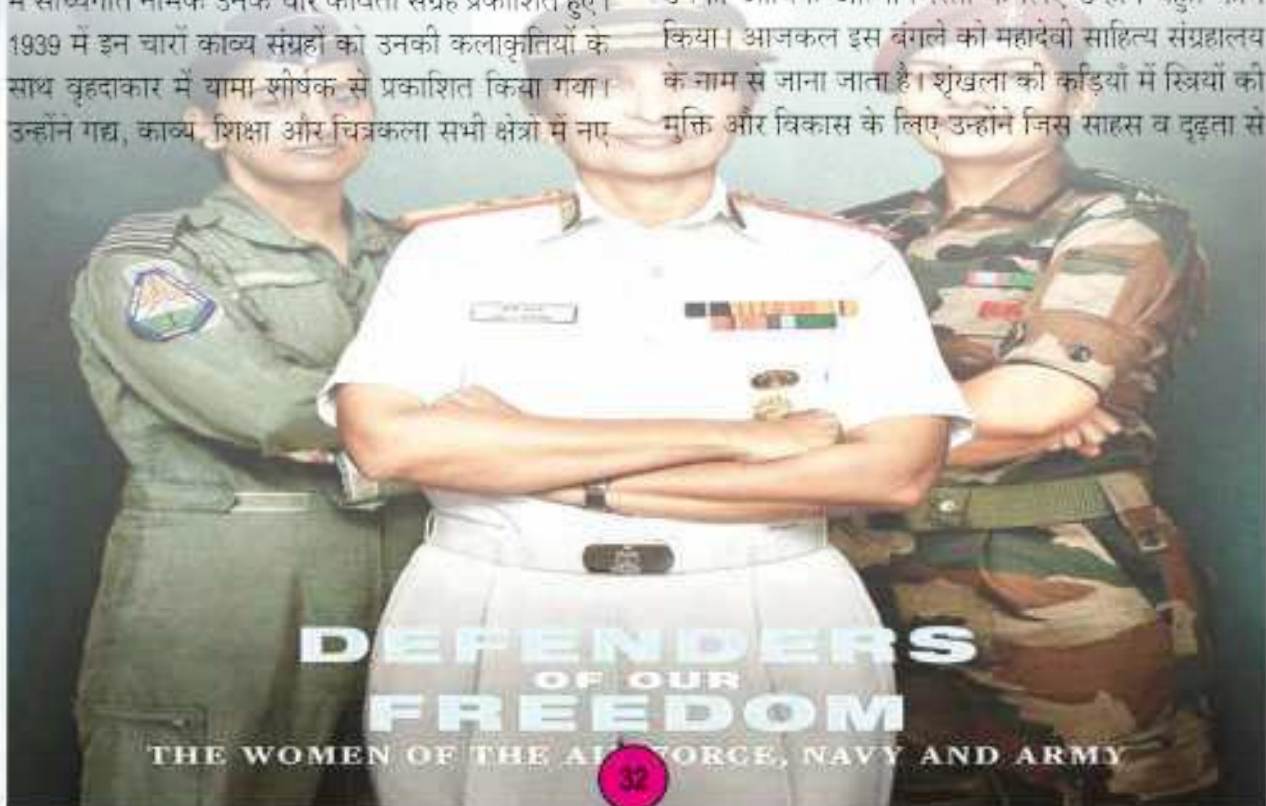


आज़ादी का
अमृत महोत्सव

उस समय क्रॉस्टीविय कॉलेज इलाहाबाद के छात्रावास में थीं। श्रीमती महादेवी वर्मा को विवाहित जीवन से विरक्ति थी। कारण कुछ भी रहा हो पर श्री स्वस्व नारायण वर्मा से कोई वैमनस्य नहीं था। सामान्य स्त्री-पुरुष के रूप में उनके सम्बन्ध मधुर ही रहे। दोनों में कभी-कभी पत्राचार भी होता था। यदा-कदा श्री वर्मा इलाहाबाद में उनसे मिलने भी आते थे। श्री वर्मा ने महादेवी जी के कहने पर भी दूसरा विवाह नहीं किया। महादेवी जी का जीवन तो एक संन्यासिनी का जीवन था। उन्होंने जीवन भर श्वेत वस्त्र पहना, तख्त पर सोई और कभी शीशा नहीं देखा। सन् 1966 में पति की मृत्यु के बाद वे स्थायी रूप से इलाहाबाद में रहने लगीं।

महादेवी का कार्यक्षेत्र लेखन, सम्पादन और अध्यापन रहा। उन्होंने इलाहाबाद में प्रयाग महिला विद्यापीठ के विकास में महत्वपूर्ण योगदान किया। यह कार्य अपने समय में महिला-शिक्षा के क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम था। इसकी वे प्रधानाचार्य एवं कुलपति भी रहीं। 1923 में उन्होंने महिलाओं की प्रमुख पत्रिका 'चाँद' का कार्यभार संभाला। 1930 में नीहार, 1932 में रश्मि, 1934 में नीरजा, तथा 1936 में सांध्यगीत नामक उनके चार कविता संग्रह प्रकाशित हुए। 1939 में इन चारों काव्य संग्रहों को उनकी कलाकृतियों के साथ वृहदाकार में यामा शीर्षक से प्रकाशित किया गया। उन्होंने गद्य, काव्य, शिक्षा और चित्रकला सभी क्षेत्रों में नए

आयाम स्थापित किये। इसके अतिरिक्त उनकी 18 काव्य और गद्य कृतियां हैं जिनमें मेरा परिवार, स्मृति की रेखाएं, पथ के साथी, शृंखला की कड़ियाँ और अतीत के चलचित्र प्रमुख हैं। सन् 1955 में महादेवी जी ने इलाहाबाद में साहित्यकार संसद की स्थापना की और पं इलाचंद्र जोशी के सहयोग से साहित्यकार का सम्पादन संभाला। यह इस संस्था का मुखपत्र था। उन्होंने भारत में महिला कवि सम्मेलनों की नींव रखी। इस प्रकार का पहला अखिल भारतवर्षीय कवि सम्मेलन 15 अप्रैल 1933 को सुभद्रा कुमारी चौहान की अध्यक्षता में प्रयाग महिला विद्यापीठ में सम्पन्न हुआ। वे हिन्दी साहित्य में रहस्यवाद की प्रवर्तिका भी मानी जाती हैं। महादेवी बौद्ध पन्थ से बहुत प्रभावित थीं। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में भी हिस्सा लिया। 1936 में नैनीताल से 25 किलोमीटर दूर रामगढ़ कसबे के उमागढ़ नामक गाँव में महादेवी वर्मा ने एक बंगला बनवाया था जिसका नाम उन्होंने मीरा मन्दिर रखा था। जितने दिन वे यहाँ रहीं इस छोटे से गाँव की शिक्षा और विकास के लिए काम करती रहीं। विशेष रूप से महिलाओं की शिक्षा और उनकी आर्थिक आत्मनिर्भरता के लिए उन्होंने बहुत काम किया। आजकल इस बंगले को महादेवी साहित्य संग्रहालय के नाम से जाना जाता है। शृंखला की कड़ियाँ में स्त्रियों की मुक्ति और विकास के लिए उन्होंने जिस साहस व दृढ़ता से





समृद्धि कृतकर्म
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसभा सचिवालय
Dedicated to Truth in Public Interest



आवाज़ उठाई हैं और जिस प्रकार सामाजिक रूढ़ियों की निन्दा की है उससे उन्हें महिला मुक्तिवादी भी कहा गया। महिलाओं व शिक्षा के विकास के कार्यों और जनसेवा के कारण उन्हें समाज-सुधारक भी कहा गया है। उनके सम्पूर्ण गद्य साहित्य में पीड़ा या वेदना के कहीं दर्शन नहीं होते बल्कि अदम्य रचनात्मक रोष, समाज में बदलाव की अदम्य आकांक्षा और विकास के प्रति सहज लगाव परिलक्षित होता है।

‘नीरजा’ महादेवी वर्मा का तीसरा कविता-संग्रह है। ‘नीरजा’ में रश्मि का चिंतन और दर्शन अधिक स्पष्ट और प्रौढ़ होता है। कवयित्री सुख-दुख में समन्वय करती हुई पीड़ा एवं वेदना में आनंद की अनुभूति करती है।

‘सांध्यगीत’ महादेवी वर्मा का चौथा कविता संग्रह है। इसके गीतों में नीरजा के भावों का परिपक्व रूप मिलता है। यहाँ न केवल सुख-दुख का बल्कि आँसू और वेदना, मिलन और विरह, आशा और निराशा एवं बंधन-मुक्ति का समन्वय है।

‘दीपशिखा’ उनका पंचवा कविता-संग्रह है। इस संग्रह की भूमिका में वे स्वयं कहती हैं – “दीपशिखा में मेरे कुछ ऐसी रचनाएँ संग्रहित हैं जिन्हें मैंने रंगरेखा की धुंधली पृष्ठभूमि देने का प्रयत्न किया है। सभी रचनाओं को ऐसी पीठिका देना न संभव होता है और न रुचिकर, अतः रचनकरम की दृष्टि से यह छितरागीत बहुत बिखरे ही रहेंगे। और मेरे गीत अध्यात्म के अमूर्त आकाश के नीचे

लोक-गीतों की धरती पर पले हैं।”

‘शृंखला की कड़ियाँ’ महादेवी वर्मा के निबंधों का संग्रह है। स्त्री विमर्श एवं स्त्री सशक्तिकरण इसमें प्रमुख हैं एवं स्त्री अधिकारवाद की झलक भी दिखाई पड़ती है। पिछले कुछ समय से स्त्री विमर्श की चर्चा हो रही है। ‘शृंखला की कड़ियाँ’ में महादेवी वर्मा ने तत्कालीन सामाजिक परिस्थितियों में नारी की दशा, दिशा, कष्ट एवं संघर्ष पर अपनी लेखनी चलाई है। इस पुस्तक की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत की जाती हैं – “भारतीय नारी जिस दिन अपने सम्पूर्ण प्राण-आवेग से जग सके उस दिन उसकी गति रोकना किसी के लिए संभव नहीं। उसके अधिकारों के संबंध में यह सत्य है कि वे भिक्षावृत्ति से न मिले हैं, न मिलेंगे क्योंकि उनकी स्थिति आदान-प्रदान योग्य वस्तुओं से भिन्न है। समाज में व्यक्ति का सहयोग और विकास की दिशा में उसका उपयोग ही उसके अधिकार निश्चित करता है। किन्तु, अधिकार के इच्छुक व्यक्ति को अधिकारी भी होना चाहिए। समान्यतः भारतीय नारी में इस विशेषता का अभाव मिलता है। कहीं उसमें साधारण दयनीयता और कहीं असाधारण विद्रोह है, परंतु संतुलन से उसका जीवन परिचित नहीं”।

उन्होंने अपने जीवन का अधिकांश समय उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद नगर में बिताया। 11 सितम्बर 1987 को इलाहाबाद में रात 9 बजकर 30 मिनट पर उनका देहांत हो गया।

Mahadevi Verma

26, March 1907, - 11, September 1987.



संयुक्त राष्ट्र संघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसिंहास्यं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आजादी का अमृत महोत्सव



सुशील कुमार राम
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आजादी का अमृत महोत्सव प्रगतिशील भारत के 75 वर्ष पूरे होने और यहां के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को याद करने और जश्न मनाने के लिए भारत सरकार की ओर से की जाने वाली एक पहल है।

यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है, जिन्होंने न केवल भारत को उसकी विकास यात्रा में आगे लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, बल्कि उनके भीतर प्रधानमंत्री मोदी के भारत 2.0 को सक्रिय करने के दृष्टिकोण को संभव बनाने की शक्ति और क्षमता भी है, जो आत्मनिर्भर भारत की भावना से प्रेरित है।

आजादी का अमृत महोत्सव भारत की सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान को प्रगति की ओर ले जाने वाली सभी चीजों का एक मूर्त रूप है। आजादी का अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा की शुरुआत 12 मार्च 2021 को हो गई जिसकी 75 सप्ताह की उल्टी गिनती हमारी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगांठ के लिए शुरू हो गई है तथा यह 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगी।

आजादी का अमृत महोत्सव का थीम

1. इतिहास में मील के पत्थर, गुमनाम नायकों आदि को याद करना: यह विषय आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत हमारे स्मरणोत्सव पहल की शुरुआत करता है। यह उन गुमनाम नायकों की कहानियों को जीवंत करने में मदद करता है जिनके बलिदान ने हमारे लिए स्वतंत्रता को वास्तविक बना दिया है और 15 अगस्त 1947 की ऐतिहासिक यात्रा में मील के पत्थर, स्वतंत्रता आंदोलनों आदि का भी पुनरीक्षण करता है। इन कार्यक्रमों में बिरसा मुंडा जयंती (जनजातीय गौरव दिवस), नेताजी, शहीद दिवस द्वारा स्वतंत्र भारत की अनंतिम सरकार की घोषणा आदि शामिल हैं।

2. भारत को आकार देने वाले विचारों और आदर्शों का जश्न मनाना: यह विषय उन विचारों और आदर्शों से प्रेरित कार्यक्रमों और आयोजनों पर केंद्रित है जिन्होंने हमें आकार दिया है और अमृत काल (भारत@75 और भारत@100 के बीच 25 वर्ष) की इस अवधि के दौरान संचालन करते समय हमारा मार्गदर्शन करेंगे।



Azadi Ka
Amrit Mahotsav

A festival of films on Freedom Struggle and Freedom Fighters...



3. विशेष उद्देश्य और लक्ष्यों के लिए प्रतिबद्धताओं को मजबूत करना: यह विषय हमारी मातृभूमि की नियति को आकार देने के हमारे सामूहिक संकल्प और अवधारण पर केंद्रित है। 2047 की यात्रा के लिए हममें से प्रत्येक को जाग्रत होना होगा और व्यक्तियों, समूहों, नागरिक समाज, शासन की संस्थाओं आदि के रूप में अपनी भूमिका निभानी होगी।

4. नीतियों को लागू करने और प्रतिबद्धताओं को साकार करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर प्रकाश डालना: यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है जो नीतियों को लागू करने और प्रतिबद्धताओं को साकार करने के लिए उठाए जा रहे कदमों पर प्रकाश डालते हुए भारत को कोविड के बाद की दुनिया में उभर रही नई विश्व व्यवस्था में अपना सही स्थान दिलाने में मदद करने के लिए किए जा रहे हैं। यह प्रधान मंत्री मोदी के साथ सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के आह्वान से प्रेरित है।

5. विभिन्न क्षेत्रों में विकास और प्रगति का प्रदर्शन: यह विषय समय बीतने और हमारे रास्ते में सभी मील के पत्थरों को चिह्नित करने पर केंद्रित है। इसका उद्देश्य 5000 साल से ज्यादा के प्राचीन इतिहास की विरासत के साथ 75 साल पुराने स्वतंत्र देश के रूप में हमारी सामूहिक उपलब्धियों के सार्वजनिक हित में विकसित होना है तथा 1971 की जीत के लिए समर्पित स्वर्णिम विजय वर्ष, महापरिनिर्वाण दिवस के दौरान श्रेष्ठ योजना का शुभारंभ आदि जैसी पहल शामिल हैं।

भारत की आज़ादी के 75 वर्षों के स्मरणोत्सव के रूप में आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत के स्वतंत्रता संग्राम को समर्पित उसकी गाथा की याद दिलाता है। पूरे विश्व के लोग भारत की इस अतुलनीय भावना और उज्ज्वल भविष्य से जुड़े कार्यों और उपलब्धियों के माध्यम से इन यादगार लम्हों को जीवंत कर रहे हैं। आज़ादी का अमृत महोत्सव की इसी कड़ी में हम भारत के वीर सपूत मंगल पाण्डेय तथा एक राष्ट्रीय ऐतिहासिक धरोहर अलीपुर सेंट्रल जेल के बारे में जानेंगे। भारत के स्वाधीनता संग्राम में पश्चिम बंगाल का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। भारत का प्रथम स्वाधीनता संग्राम 1857 की लड़ाई जिसकी शुरुआत बैरकपुर से की गई थी जिसके महानायक मंगल पाण्डेय थे तथा स्वतंत्रता सेनानियों पर की गई क्रूरता का मूक गवाह पश्चिम बंगाल की अलीपुर सेंट्रल जेल जो आने वाली पीढ़ियों को बलिदान की याद दिलाती है।

भारत के स्वाधीनता संग्राम में मंगल पाण्डेय का योगदान

मंगल पाण्डेय भारत के वह वीर सपूत थे, जिन्होंने भारत माता को गुलामी की बँडियों से आजाद कराने के लिए भारतीय लोगों के दिलों में स्वतंत्रता तथा अधिकार की चिंगारी जलाई और अंग्रजों के काली नीति के विरुद्ध अकेले ही संघर्ष छेड़ दिया।

मंगल पाण्डेय 1849 में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेना में शामिल हुए और बैरकपुर की सैनिक छावनी में 34 वीं बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की पैदल सेना में एक सिपाही





संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

रहे।

ईस्ट इंडिया कंपनी की स्वार्थी नीतियों के कारण मंगल पाण्डेयश्रेके मन में अंग्रेजी हुकूमत के प्रति पहले ही नफरत थी। जब कंपनी की सेना की बंगाल इकाई में नई कारतूसों का इस्तेमाल शुरू हुआ तो इन कारतूसों को बंदूक में डालने से पहले मुंह से खोलना पड़ता था। सैनिकों के बीच ऐसी खबर फैल गई कि इन कारतूसों को बनाने में गाय तथा सूअर की चर्बी का प्रयोग किया जाता है जो कि हिन्दू और मुसलमानों दोनों के लिए गंभीर और धार्मिक विषय था।

इस अफवाह ने सैनिकों के मन में अंग्रेजी सेना के विरुद्ध आक्रोश पैदा कर दिया। इसके बाद 9 फरवरी 1857 को जब यह कारतूस देशी पैदल सेना को बांटा गया तब मंगल पाण्डेय ने कारतूसों को लेने से इनकार कर दिया। इस बात से गुस्साए अंग्रेज अफसर द्वारा मंगल पांडे से उनके हथियार छीन लेने और वर्दी उतारने का हुकम दिया गया जिसे मंगल पाण्डेय ने मानने से इनकार कर दिया। उन्होंने राइफल छीनने के लिए आगे बढ़ने वाले अंग्रेज अफसर मेजर ह्यूसन पर हमला कर घायल कर दिया। मंगल पांडेय अब पूरी तरह से अंग्रेजों के खिलाफ हो गए और अपने अन्य साथियों से खुलेआम समर्थन का आवाहन करने लगे तथा बैरकपुर छावनी में 29 मार्च 1857 को अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह का बिगुल बजा दिया।

इस घटना के बाद उन्हें अंग्रेज सिपाहियों द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और 6 अप्रैल 1857 को फांसी की सजा सुना दी गई। फैसले के अनुसार उन्हें 18 अप्रैल 1857 को फांसी दी जानी थी, लेकिन ब्रिटिश अफसरों को मंगल पाण्डेय का इतना भय था कि दस दिन पूर्व ही 8 अप्रैल सन् 1857 को फांसी दे दी गई।

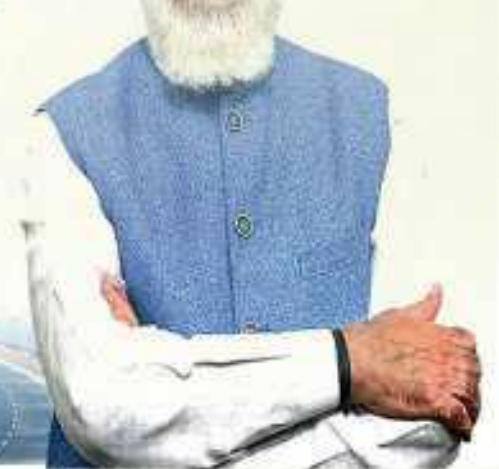
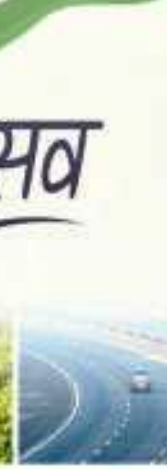
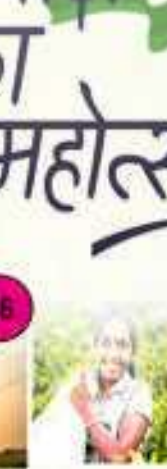
मंगल पाण्डेय द्वारा विद्रोह किए जाने के एक महीने बाद ही मेरठ की सैनिक छावनी में भी बगावत हुई और यह विद्रोह देखते-देखते पूरे उत्तर भारत में फैल गया और अंग्रेजों के खिलाफ जगह-जगह संघर्ष भड़क उठा। हालांकि अंग्रेज इसे काबू करने में कामयाब रहे लेकिन मंगल पाण्डेय द्वारा लगाई गई यह चिंगारी ही आजादी की लड़ाई का मूल बीज साबित हुई।

यह विद्रोह ही भारत का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम था, जिसमें सिर्फ सैनिक ही नहीं, राजा-रजवाड़े, किसान, मजदूर एवं अन्य सभी सामान्य लोग शामिल हुए। इस विद्रोह के बाद भारत पर राज्य करने का अंग्रेजों का सपना उन्हें कमजोर होता साबित हुआ।

भारत के स्वाधीनता संग्राम में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को लेकर भारत सरकार द्वारा उनके सम्मान में सन् 1984 में एक डाक टिकट जारी किया गया।

अलीपुर संग्रहालय

अलीपुर सेंट्रल सुधार गृह कोलकाता के केंद्र में



आजादी का अमृत महोत्सव



संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

स्थित एक राष्ट्रीय ऐतिहासिक धरोहर है। यह 100 साल से अधिक पुरानी इमारत, प्रेसीडेंसी जेल के साथ, कोलकाता के विरासत स्थलों की ग्रेड 1 सूची में है। 1906 में निर्मित, और 15.2 एकड़ में फैला है इसकी विशिष्ट ईंट-लाल दीवारों के साथ आसानी से पहचाना जा सकता है। परिसर के भीतर अलीपुर जेल प्रेस बिल्डिंग, सेंट्रल वॉचटावर, एक दर्जन से अधिक इमारतें देखा जा सकता है, जो सेल तथा वार्ड और अलीपुर जेल अस्पताल की इमारत के रूप में काम करती हैं। इसने 2019 तक एक सुधार गृह के रूप में काम किया जब कैदियों को कोलकाता के बाहरी इलाके बरूईपुर में स्थानांतरित कर दिया गया। अलीपुर सेंट्रल सुधार गृह देश के स्वतंत्रता सेनानियों पर की गई क्रूरता का मूक गवाह था, हेरिटेज जेल भवन को पश्चिम बंगाल हाउसिंग इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन (HIDCO) द्वारा एक स्वतंत्रता संग्रहालय के रूप में भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के शहीदों को श्रद्धांजलि के रूप में विकसित किया गया है।

सविनय अवज्ञा आंदोलन में भाग लेने के लिए ब्रिटिश सरकार द्वारा 17 फरवरी से 7 मई, 1934 तक 80 दिनों के लिए भारत के पहले प्रधान मंत्री, जवाहरलाल नेहरू को इस इमारत के एक कक्ष में रखा गया था।

ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग आंदोलन में भाग लेने के लिए कलकत्ता नगर निगम के पहले महापौर, देशबंधु चित्तरंजन दास वर्ष 1921 में को सेल नंबर 8 में कैद किया गया था।

नेताजी सुभाष चंद्र बोस (1897-1945) सविनय अवज्ञा के आरोप में 23 जनवरी, 1930 से 23 सितंबर, 1930 तक भवन के सेल में कैद रहे।

देशप्रिय जतिंद्र मोहन सेनगुप्ता, (1885-1933), कलकत्ता नगर निगम के मेयर, अप्रैल 1930 में और फिर 22 अक्टूबर, 1932 से 5 जून, 1933 तक इस इमारत की पहली मंजिल के सेल 6 में कैद थे।

डॉ. बिधान चंद्र रॉय, पश्चिम बंगाल के दूसरे मुख्यमंत्री, को सेल नंबर 4 में 5 सितंबर, 1930 से 1 जनवरी, 1931 तक कैद किया गया था।

इसके अलावा इन शहीदों को जिन्हें इस जेल में फांसी दी गई थी उनके नाम हैं; सत्येंद्रनाथ बसु, कनाईलाल दत्ता, चारु चंद्र बोस, बिरेन्द्रनाथ दत्ता गुप्ता, गोपीनाथ साहा, प्रमोद रंजन चौधुरी, अनंत हरी मित्रा, रामकृष्ण विश्वास, दिनेश गुप्ता तथा दिनेश मजूमदार। अरविन्द घोषश्या श्री अरविन्द को लगभग एक वर्ष के लिए (मई 1908 से मई 1909) तक अलीपुर बम कांडके तुरंत बाद यहाँ रखा गया था। यहाँ रहने के समय में श्री अरविन्द ने बंगाली पत्रिका सुप्रभात में कई लेख लिखे थे जिन्हें आगे चलकरस्टेल्स ऑफ़ प्रिज़न लाइफ़ (Tales of Prison life) के रूप में प्रकाशित किया गया था।

इसके परिसर में घूमना साथी देशवासियों और इससे भी महत्वपूर्ण बात, स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा सामना की जाने वाली अत्यधिक पीड़ा के युग में चलने जैसा है।

‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ के अंतर्गत हमारे स्मरणोत्सव पहल की शुरुआत करता है। यह गुमनाम नायकों की कहानियों को जीवंत करने में मदद करता है। जैसा कि हम 15 अगस्त 2023 की ओर बढ़ रहे हैं, ‘आज़ादी का अमृत महोत्सव’ का उद्देश्य सांस्कृतिक और सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करके इस जन आंदोलन को और प्रोत्साहन देना है।



वन्देन सृष्ट्यन्तम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिताम्
Dedicated to Truth in Public Interest



कोलकाता: ए सिटी ऑफ जॉय



नुपुर साव
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रसिद्ध पत्रकार वीर सांग्रवी ने एक बार कहा था, "Calcutta is not for everyone. You want your cities clean and green; stick to Delhi. You want your cities, rich and impersonal; go to Bombay. You want them high tech and full of draught beer; Bangalore's your place. But if you want a city with a soul, come to Calcutta".

प्रसिद्ध लेखक डॉमिनिक लैपिरे ने भी 'सिटी ऑफ जॉय' नाम से इस शहर पर आधारित एक उपन्यास लिखा था, जिस पर 1992 में एक फिल्म भी बनी थी।

इस 'सिटी ऑफ जॉय' ने अपनी संस्कृति, परंपराओं, साहित्य, इतिहास, भोजन इत्यादि के लिए अबाध उत्साह के कारण अपना उपनाम अर्जित किया है। कोलकाता पुरानी दुनिया के आकर्षण और आधुनिक भारत का सही समामेलन है। इस शहर का हर नुक्कड़ और कोना ऐसी कहानियों से भरा पड़ा है जो आपको मंत्रमुग्ध कर देगी।

कोलकाता में सभी के लिए कुछ न कुछ है। कला और साहित्य से लेकर, खेल, भोजन, खरीदारी, इतिहास, वास्तुकला, धर्म, अध्यात्म और यहां तक कि राजनीति। कोलकाता में कल्पना से कहीं अधिक है; चलो इस जॉय के शहर की एक संक्षिप्त झलक देखें:

कोलकाता का संक्षिप्त इतिहास

कोलकाता, जिसे पहले कलकत्ता के नाम से जाना जाता था, 17वीं शताब्दी में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी द्वारा विकसित किया गया था। 24 अगस्त 1690 को एक ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी, जॉब चार्नॉक यहाँ एक व्यापारिक समझौता स्थापित करने की दृष्टि से सुतानुती गाँव में आए। तीन गाँवों सुतानुती, गाँवदपुर और कलिकाता को स्थानीय जमींदार परिवार, सुबरना राय चौधरी परिवार से अधिग्रहित किया गया और इसके साथ ही फोर्ट विलियम का निर्माण 1696 में शुरू हुआ और इन

गाँवों के आस-पास ही कोलकाता का व्यापारिक शहर विकसित हुआ। यह 1911 तक ब्रिटिश भारतीय साम्राज्य की राजधानी हुआ करती थी और इसके बाद राजधानी को दिल्ली स्थानांतरित किया गया था। अंग्रेजों से पहले, कलकत्ता पर बंगाल सल्तनत (मुगलों) का शासन था। धनी बंगाली व्यापारी और जमींदारों ने उत्तर बंगाल में कई राजबाड़ी या महलों का निर्माण किया, जो बंगाल पुनर्जागरण के केंद्र के रूप में कार्य करते हैं। इसलिए 17वीं और 18वीं सदी में इसे महलों का शहर भी कहा जाता था। इसने वैभव में लंदन को भी टक्कर दे रखी थी।

यह नगर वंशावली के विशाल संग्रह का आभास कराती है जो सर्वत्र दृष्टिगोचर होता है। पुराने घर और इमारतें तथा वे संकरी गलियाँ जिसमें कभी टैगोर चलते थे, पड़ोस में आम विशेषता हैं। शाम को हर घर से रवींद्र संगीत की आवाज़ आज भी सुनाई पड़ती है। कोलकाता अपनी क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए विख्यात स्वतंत्रता सेनानियों, समाज सुधारकों, प्रमुख राजनेताओं और योगियों की भूमि भी है। सुभाष चंद्र बोस, चितरंजन दास, अरविंदो, बाघा जतिन, मंतीगिनी हाजरा, मौलाना अबुल कलाम आजाद, राजा राम मोहन राय, स्वामी विवेकानंद, ईश्वर चंद्र विद्या सागर और अन्य कई ने मातृभूमि के कल्याण के लिए अपना सर्वश्वर न्यौछावर कर दिया।

यह किसी भी अन्य भारतीय मेट्रोपोलिटन शहर की तुलना में 1200 सूचीबद्ध विरासत संरचना का घर है।

प्रदीप सरकार ने ठीक ही कहा है, "Calcutta is beautiful. Wherever you place a camera, you get a vision." अब कोलकाता के कुछ ऐतिहासिक स्थान का अनुभव करते हैं:

विक्टोरिया मेमोरियल

1906 और 1921 के बीच, ब्रिटिश साम्राज्यी, रानी विक्टोरिया के सम्मान में कोलकाता में एक वास्तुशिल्प आश्चर्य और सबसे प्रतिष्ठित स्मारकों में से एक,



वन्देव्यं वृन्दवन्दनम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



ब्रिक्टोरिया मेमोरियल बनवाया गया था। शहर के मध्य में स्थित, यह संरचना सफेद संगमरमर से बनी है और सबसे अधिक फोटो खिंचवाने वाली इमारतों में से एक मानी जाती है। यह संग्रहालय सभी के लिए खुला है और इसमें ब्रिटिश काल की अमूल्य मूर्तियां, पेंटिंग, हथियार प्रदर्शित किए गए हैं।

अर्मेनियाई चर्च

अर्मेनियाई चर्च, जिसे नाज़रेथ के पवित्र चर्च के रूप में भी जाना जाता है, 18 वीं शताब्दी में कोलकाता में अर्मेनियाई अपोस्टोलिक चर्च के रूप में बनाया गया था। 1705 में ब्रिटिश ईस्ट कंपनी द्वारा वित्त पोषित चर्च अर्मेनियाई आबादी द्वारा भारत में शरण लेने के लिए अंग्रेजों के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर करने के बाद बनाई गई पहली इमारतों में से एक है।

भारतीय संग्रहालय

1814 में एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल द्वारा स्थापित, इसे इंपीरियल संग्रहालय के रूप में भी जाना जाता है, और यह दुनिया का नौवां सबसे पुराना संग्रहालय है। यह संग्रहालय भारत का सबसे पुराना और सबसे बड़ा संग्रहालय है और इसमें प्राचीन वस्तुओं, कवच, आभूषणों, जीवाश्मों, ममियों और मुगल चित्रों का दुर्लभ संग्रह है।

जोरासांको ठाकुर बारी

उत्तरी कोलकाता के जोरासांको में स्थित यह हवेली कवि और नोबेल पुरस्कार विजेता रवींद्रनाथ टैगोर का पैगूक घर है। टैगोर का जन्म यहीं हुआ था और उन्होंने अपना अधिकांश वचन भी यहीं बिताया था।

फोर्ट विलियम

तत्कालीन मुगल सम्राट औरंगजेब से अनुमति लेने के बाद 1696 में हुगली नदी के तट पर ब्रिटिश भारत के बंगाल प्रेसीडेंसी के शासन के दौरान इस किले का निर्माण किया गया था। इसका नाम किंग विलियम III के नाम पर रखा गया था। आज, फोर्ट विलियम भारतीय सेना के स्वामित्व में है और पूर्वी कमान का मुख्यालय है।

प्रिंसेप घाट

प्रिंसेप घाट अंग्रेजों द्वारा 1841 में हुगली नदी के तट पर बनाया गया एक घाट है। यह कोलकाता के सबसे पुराने मनोरंजक स्थलों में से एक है। घाट का नाम प्रिंसेप

विद्वान जेम्स प्रिंसेप के नाम पर रखा गया था और 1843 में ग्रीक और गोथिक वास्तुकला के मिश्रण से यहाँ पर एक पल्लाडियन मेमोरियल पोर्च का निर्माण किया गया था।

राइटर्स बिल्डिंग

राइटर्स बिल्डिंग कोलाता में पश्चिम बंगाल की राज्य सरकार का आधिकारिक सचिवालय भवन है। 150 मीटर लंबी इमारत ऐतिहासिक बीबीडी के केंद्र में प्रतिष्ठित लाल दीघी या लाल झील के पूरे उत्तरी खंड को कवर करती है। बाग, लंबे समय से शहर का प्रशासनिक और व्यापारिक केंद्र माना जाता है।

किताबी कीड़ों का घर

किताबी कीड़ों की भूमि कोलकाता में कॉलेज स्ट्रीट या 'बोई पारा' (पुस्तकों की कॉलोनी) भारत का सबसे बड़ा पुस्तक बाजार है। वास्तव में, यह दुनिया का सबसे बड़ा सेकेंड हैंड बुक मार्केट है जो मध्य कोलकाता में 1.5 किमी के विशाल क्षेत्र में फैला हुआ है। किसी भी भारतीय भाषा में लिखी गई कोई भी किताब, नई या पुरानी यहाँ उपलब्ध पाई जाती है। साथ ही, कोलकाता का राष्ट्रीय पुस्तकालय देश का सबसे बड़ा सार्वजनिक पुस्तकालय भी है।

एशिया का सबसे बड़ा पुस्तक मेला और विश्व का तीसरा सबसे बड़ा पुस्तक मेला कोलकाता पुस्तक मेला है। यह मेला केवल किताबों तक ही सीमित नहीं है बल्कि मेले की पूरी अवधि के दौरान नियमित रूप से कला और कलात्मक प्रस्तुतियों के विभिन्न रूपों को भी शामिल करता है।

कुछ धार्मिक स्थल

51 शक्तिपीठों में सबसे पवित्र माने जाने वाले कालीघाट काली मंदिर एक दर्शनीय स्थल है। यह मंदिर हुगली नदी को जोड़ने वाली एक छोटी नहर, आदि गंगा के तट पर स्थित है। ऐसा माना जाता है कि मंदिर का निर्माण 15वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य के शासन काल में हुआ था। दंत कथाओं के अनुसार सती के दाहिना पैर का अँगूठा कालीघाट में गिरा था, जहाँ बाद में मंदिर बनवाया गया था, और यहाँ की पीठासीन देवता को कालिका कहा जाता है, जिनके नाम पर शहर का नाम कोलकाता पड़ा। दक्षिणेश्वर काली मंदिर हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। मंदिर का



वैश्विक वृद्धिकर्मा
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



निर्माण 1855 में रानी रशमोनी द्वारा किया गया था। यह श्री रामकृष्ण परमहंस और माँ शारदा के साथ अपने जुड़ाव के लिए प्रसिद्ध है।

क्या आप जानते हैं ?

सती के दाहिना पैर का अँगूठा कालीघाट में गिरा था, जहाँ बाद में मंदिर बनवाया गया था, और यहाँ की पीठासीन देवता को कालिका कहा जाता है, जिनके नाम पर शहर का नाम कोलकाता पड़ा। दक्षिणेश्वर काली मंदिर हुगली नदी के पूर्वी तट पर स्थित है। मंदिर का निर्माण 1855 में रानी रशमोनी द्वारा किया गया था। यह श्री रामकृष्ण परमहंस और माँ शारदा के साथ अपने जुड़ाव के लिए प्रसिद्ध है।

कोलकाता एकमात्र भारतीय राज्य है जो यात्रा के अन्य साधनों के अलावा ट्राम सेवा भी उपलब्ध कराता है और यह वर्ष 1902 से संचालित हो रही है। कलकत्ता ट्रामवेज कंपनी आज एशिया की सबसे पुरानी इलेक्ट्रिक ट्राम चलाती है।

यही नहीं, विश्व का पहला पोलो क्लब कोलकाता में स्थापित किया गया था जिसे कलकत्ता पोलो क्लब के नाम से जाना जाता है। जबकि रॉयल कलकत्ता गोल्फ

क्लब यूनाइटेड किंगडम के बाहर बनने वाला पहला क्लब था।

कोलकाता का साल्ट लेक स्टेडियम दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा फुटबॉल स्टेडियम है।

बिड़ला तारामंडल एशिया का सबसे बड़ा तारामंडल है और वास्तव में, यह दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा तारामंडल भी है।

आचार्य जगदीश चंद्र बोस भारतीय वनस्पति उद्यान में दुनिया का सबसे बड़ा पेड़, ग्रेट बरगद का पेड़ है। यह परिधि में 330 मीटर से भी अधिक है।

यह जानना भी दिलचस्प है कि विश्व प्रसिद्ध मिठाई रोशोगुल्ला के जनक श्री नोबिन चंद्र दास थे। एक सच्चे बंगाली की तरह, उसने अपने यहाँ आए एक व्यापारी को इस सफेद रंग की मिठाई की थाली और एक ग्लास पानी की पेशकश की थी। व्यापारी तुरंत उस प्यारी स्पंजी मिठाई खाकर मंत्रमुग्ध हो गया और उस मिठाई की एक बड़ी मात्रा घर ले गया। और तब से, रोशोगुल्ला अनंत काल के लिए पश्चिम बंगाल की प्रतिष्ठित मिठाई बन गई।

यह हमारा कोलकाता है। कोलकाता के लोग अपने जीवन के हर पल को जीने में विश्वास रखते हैं।





वैश्विक कुटुम्बक
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मानव जीवन और नैतिक मूल्य



आनन्द कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

मनुष्य के जीवन में नैतिक मूल्यों का बहुत अधिक महत्त्व है। मनुष्य के जीवन का प्रत्येक पहलू नैतिक मूल्यों से संबंधित है। नैतिक मूल्य मनुष्य को एक व्यापक दृष्टि प्रदान करते हैं। नैतिक मूल्यों के पालन के फलस्वरूप मनुष्य को सामाजिक सम्मान प्राप्त होता है जो उसे समाज में उचित स्थान प्रदान करता है। नैतिक मूल्यों का महत्त्व इतना अधिक है कि इसके आधार पर चरित्र का निर्धारण किया जाता है। चरित्र के व्यापक विकास हेतु नैतिक मूल्यों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अत्यंत आवश्यक है। चरित्र के उचित विकास एवं उन्नति हेतु नैतिक मूल्यों का उपयोग महत्वपूर्ण साधन है।

मनुष्य नैतिक मूल्य के कारण प्रत्येक कार्य को ईमानदारी के साथ करता है। कार्य को ईमानदारी के साथ सम्पन्न करने के कारण भ्रष्टाचार के लिए कोई स्थान नहीं रहता है। नैतिक मूल्यों के पालन से समाज में व्याप्त दोष कम होते जाते हैं और समाज एक अपराध-मुक्त समाज की ओर अग्रसर होता जाता है तथा एक उचित वातावरण का निर्माण होता है। इससे समाज में संतोष बढ़ता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह हेतु अपना प्रयास करता है। प्रत्येक एक दूसरे के सहयोग के लिए तत्पर रहते हैं।

मनुष्य के लिए स्वयं का मूल्यांकन अत्यंत आवश्यक है। यदि मनुष्य के जीवन में नैतिक मूल्यों की कमी होती है तो सामाजिक दोष अपना प्रभाव दिखाना प्रारंभ करे हैं। मनुष्य के जीवन का उद्देश्य केवल धनार्जन करना नहीं होना चाहिए बल्कि नैतिक मूल्यों को धनार्जन के ऊपर स्थान देना चाहिए। मनुष्य को अपनी गलतियों से सीख लेते हुए स्वयं में सुधार लाने का प्रयास करना चाहिए। अपने उत्तरदायित्व के निर्वाह हेतु सदैव सजग रहना चाहिए तथा अन्य के ऊपर दोषारोपण करने से बचना चाहिए। मनुष्य के लिए नैतिक मूल्यों का ज्ञान होना अत्यंत

आवश्यक है और हर परिस्थिति में इनके पालन हेतु अपना सर्वोत्तम प्रयास कराना चाहिए।

नैतिक मूल्य मनुष्य को मजबूत बनाते हैं और उसमें आत्मविश्वास भरते हैं। नैतिक मूल्य मनुष्य को अपने जिम्मेदारियों के निर्वाह के लिए प्रेरित करते हैं और उसके जीवन के महत्वपूर्ण कार्यों में प्रत्येक कार्य को उचित रूप से पूर्ण करना शामिल हो जाता है जिससे यह उसके आदत का अंग बन जाता है। जो मनुष्य नैतिक मूल्यों के पालन हेतु समर्पित रहता है, वह सही और गलत के बीच के अंतर को समझने में सक्षम होता है और उसे अपने उचित कर्तव्यों का बोध रहता है तथा विपरीत परिस्थितियों में अपने आप को संभालते हुए अच्छे बुरे की परख करके सही निर्णय लेता है जो सामाजिक रूप से उचित होता है। मनुष्य नैतिक मूल्यों के फलस्वरूप अपने कार्य के प्रति निष्ठावान रहता है। नैतिक मूल्य मनुष्य के जीवन को सुखी बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। नैतिक मूल्यों का पालन करते हुए मनुष्य को अपने जीवन को संतुलित बनाए रखने में सुगमता होती है। नैतिक मूल्य मनुष्य के जीवन को सही दिशा में और उचित पथ पर अग्रसर होने में सहायता प्रदान करते हैं। जो मनुष्य नैतिक मूल्यों के पालन के प्रति दृढ़ संकल्प होता है, उसे अपने कार्य के गुण-दोषों का पता होता है तथा प्रत्येक कार्य को स्वयं के मूल्यांकन के बाद ही क्रियान्वित करता है। मनुष्य को नैतिक मूल्यों के पालन के फलस्वरूप कार्य करने हेतु उचित मार्ग का निर्धारण करने में सहायता मिलती है। नैतिक मूल्यों के पालन के फलस्वरूप एक आदर्श समाज का निर्माण किया जा सकता है जिसमें सामाजिक हित का स्थान सर्वोपरि होता है।

मनुष्य जब नैतिक मूल्यों का पालन करता है तो उसमें दया का भाव उत्पन्न होता है। दया के भाव के कारण मनुष्य में अपनापन के भाव का संचार होता है। मनुष्य का



समृद्धि कृतमन्त्रालय
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यानिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



मन स्वयं से हटकर जरूरतमंदों के साथ जुड़ जाता है और उनकी खुशी में ही अपनी खुशी दिखाई देने लगती है। नैतिक मूल्यों के पालन हेतु धैर्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण गुण है। धैर्य वह गुण है जो मनुष्य को प्रत्येक परिस्थिति में अपने आप को समान रखने में सहायता रखता है। धैर्य मनुष्य के अंदर नकारात्मक भावों को बढ़ने से रोकता है। यदि मनुष्य धैर्यवान है तो हर परिस्थिति का सामना कर सकता है। नैतिक मूल्यों के पालन हेतु आत्म-नियंत्रण अत्यंत आवश्यक है। इससे मनुष्य उचित मार्ग पर अग्रसर होता है। मनुष्य स्वयं के गुण-दोषों का मूल्यांकन करने में सफल होता है और दोषों को दूर करता है। यदि मनुष्य का स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण है तो वह अपने उचित मार्ग से कभी भी विचलित नहीं होगा और सदैव सत्य के मार्ग पर आगे बढ़ता रहेगा। नैतिक मूल्यों में विनम्रता अत्यंत महत्वपूर्ण नैतिक मूल्यों में से एक है। विनम्रता मनुष्य को बड़ों के साथ-साथ छोटों के लिए भी आदरपूर्ण व्यवहार रखने के लिए प्रेरित करता है। सभी से मधुर संबंध बनाकर रखने के लिए मनुष्य का विनम्र होना आवश्यक है। विनम्रता से मनुष्य अपने संबंधों का उचित रूप से निर्वाह कर सकता है। नैतिक मूल्य मनुष्य के लिए बहुत ही आवश्यक हैं। ये मनुष्य के जीवन को सुव्यवस्थित और सुसंगठित बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

नैतिक मूल्यों को बचपन में ही सीखाना चाहिए। बच्चों को नैतिक मूल्यों से अवगत कराना चाहिए जिससे वे अपने जीवन में आगे बढ़ सकें। बच्चों का प्रारंभ से ही नैतिक मूल्यों का पालन के प्रति जागरूक करना चाहिए। नैतिक मूल्य उनके जीवन में नई ऊर्जा का संचार करते हैं और उनमें अच्छे संस्कार पड़ते हैं। नैतिक मूल्य बच्चों में अच्छी सोच विकसित करते हैं। नैतिक मूल्य बच्चों की नींव को मजबूत करते हैं और एक अच्छे भविष्य के निर्माण के लिए उचित मार्ग प्रशस्त करते हैं। नैतिक मूल्य बच्चों को बड़ों का आदर और सम्मान करना सीखाते हैं। यदि बच्चे बचपन से ही नैतिक मूल्यों का पालन करना सीखेंगे तो वे जीवन में आने वाले बाधाओं का सामना करने में सक्षम होंगे। नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण जीवन एक आदर्श जीवन होता है। नैतिक मूल्यों से बच्चों में शालिनता विकसित होती है और उनका व्यवहार उत्तम हो जाता है। नैतिक मूल्य बच्चों में उचित स्वाभिमान की भावना उत्पन्न करते हैं और अभिमान को दूर करते हैं। बच्चों में नैतिक मूल्यों के विकास के लिए उन्हें महापुरुषों की जीवनी के अध्ययन हेतु प्रेरित किया जाना चाहिए। महापुरुषों के जीवन-चरित्र से उन्हें सही मार्ग पर चलाने की प्रेरणा मिलेगी।

नैतिक शिक्षा क्या है जो शिक्षा हमें सही गलत का



संयुक्त राष्ट्रसंघ
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



बोध कराती है हमारे हर किए कार्य का क्या परिणाम होगा नैतिक शिक्षा उसका मूल्यांकन बेहतर तरीके से हमें समझा देती है क्योंकि अगर आपके पास नैतिक शिक्षा का अभाव है तो आप अच्छे बुरे का फर्क करने में निपूण नहीं हो सकते हैं नैतिक शिक्षा आने वाले कल की सुहावनी सुबह की नींव है हम बच्चों को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक बनाएंगे तो आने वाली एक पीढ़ी ऐसी भी होगी जो पूरी तरह से नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण होगी जिससे उन्हें अपने परिवार अपने समाज और अपने देश के विकास की जिम्मेदारी पूरा करने में कोई भी बाधा महसूस नहीं होगी क्योंकि नैतिक मूल्यों का ज्ञान ही उन्हें हर बाधा से मुक्ति दिलाएगा बच्चे अगर बचपन से ही नैतिक विषयों के बारे में अपने घर में अपने विद्यालय में सीखेंगे तो इसका प्रभाव उन पर अवश्य पड़ेगा उनके व्यवहार में शालिनता और बड़े के प्रति आदर और सभी के लिए प्रेम की भावना का विकास होगा जो हमारे आनेवाली पीढ़ियों का उद्धार करेगी। नैतिक मूल्यों का मानव जीवन में महत्व नैतिकता मानवता की उच्च स्तरीय सीमा की सबसे चमकती हुई पूंजी है नैतिक मूल्यों का ज्ञान हमें स्वाभिमान देता है जो नैतिक जिम्मेदारी को जानता है वो मनुष्य कभी अभिमानी नहीं हो सकता है। जितने भी महापुरुष हुए हैं वो नैतिक मूल्यों के कीमती धरोहर हैं जहां नैतिकता है वहां सदैव शांति और प्रेम निवास करते हैं जहां नैतिकता नहीं है वहां सदैव हिंसा और दुःख का राज होता है। जीवन में कर्मयोगी बनना है तो सदैव नैतिकवान बनो। मनुष्य के कर्मों से उसकी नैतिकता का पता चलता है।

जो नैतिकवान है वहीं जानो है। जीवन में नैतिकता का पाठ सदैव खुशहाली लाती है। नैतिक मूल्य के स्रोत क्या क्या हो सकते हैं। नैतिक मूल्यों के प्रमुख स्रोत हमारा परिवार जहाँ हम शिक्षा को ग्रहण करते हैं वहाँ पर हमें किस तरीके से भविष्य के लिए नैतिक मूल्यों का पाठ पढ़ाया जाता है। वो आवश्यक है हमारा विद्यालय वहाँ की शिक्षा, वहाँ के माहौल भी बहुत कुछ निर्धारित करती हैं। नैतिकता का सीधा संबंध होता है ऐसी जिम्मेदारी जो खुद के लिए हो, परिवार के लिए हो, समाज के लिए हो, देश के लिए हो जिसमें भागीदारी स्वयं ही निश्चित करना चाहिए क्योंकि इसमें जितनी अधिक हमारी भागीदारी होगी हम नैतिकता का सही अर्थ समझेंगे। हम ये भी समझेंगे की जिम्मेदारी को निभाना ही नैतिकता की पराकाष्ठा है जिम्मेदारी जितनी हो उस जिम्मेदारी को हम एक बेहतर तरीके से निभाएं और अपनी नैतिकता से कभी मुंह न मोड़े चाहे वो हमारे सामने किसी के साथ दुर्व्यवहार हो रहा हो तो उसे रोकना ही तो मनुष्य की नैतिकता है।

माँ तुझे सलाम.....



संगीता दोलाई

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

घोसले में था चुनिया-मुनिया
गाता था गाना 'ते-रे-ना-ना'
एकदिन चुनिया बोला डरके
'हवा का झोंका तेज है' माँ
मुनिया भी बोली आँसू भरके
'मुझे ज़ोर से समेट लो माँ'
माँ ने दोनों पंख फेलाए,
जकड़ के बोली
'बच्चों मेरे नहीं रोना,
चला जायेगा हवा बस छूके,
बारिस से तुम नहीं डरना'।
अचानक डाल टूटा गिरके,
घोंसला गिरा अंधेरे में,
'माँ! माँ! मुझे बचाओ'
'माँ! माँ! मुझे पकड़ लो'
आया आवाज़ अंधेरे से।
ची ची करके बुलाती माँ
'कहाँ हो मेरे चुनिया-मुनिया?'
चाँच मार मार के हँडती माँ
अपने दोनों बच्चों को।
एक उधर तो, एक इधर
मिली माँ को बच्चों दो।

माँ बुलाई 'चुनिया-मुनिया'
आवाज़ नहीं कुछ आया।
पंख नीचे ढक के रखी
माँ अपने दोनों बच्चों को।
भीगी माँ नहीं दे पायी गर्माहट
फिर भी हिम्मत नहीं हारी माँ
सुनती रही धड़कनों की आहट।
बारिस छूटा, सूरज आया
सुन पड़ी दो चिड़िया।
चाँच से माँ खिची दोनों को
धूप लगी तो हिली चिड़िया।
मुँह से निकला ची ची।
चुँ चुँ करते, माँ भी बोली
'ये है शुरुवात तुम्हारे नव जीवन की।'



एक ही परिवार, एक ही भविष्य
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest



आज़ादी का
अमृत महोत्सव

पर्व एक बहाना



प्रकाश राणा
लेखापरीक्षक

पर्व तो एक बहाना है
सबको साथ आना है
गिले शिकवे भूल जाना है
मिलकर पर्व मनाना है ।।
नवी चाहे कोई हो
समुंद्र में ही मिल जाना है
उत्साह हो अगर पर्व की
तो उसमें ही रम जाना है ।।
समुंद्र का हृदय देखो,
खिराट स्वरूप निराला है
चाहे कितनी भी उफान हो नदियों में
नतमस्तक होकर मिल जाना है
राहें भले अनेक हों,
पर एक राह को ही जाना है,
पर एक ही राह अपनाना है ।।

पर्व की मधुरता को समझो
इसे अपना पराया ना मानो
पर्व अगर जोड़े कई दिलों को
तो जुड़ने का अवसर तलासो ।
जैसे ईश्वर के हैं रूप अनेक
वैसे पर्व के भी स्वरूप अनेक
आज ही अटल, तुलसी और प्यारे का दिन
तो ना कर विवाद पुराने, ना ला सौच पुराने ।।।
गिले शिकवे सब भूल
सब को है साथ आने
पर्व हो चाहे नए पुराने
सबको मिलकर है मानने,
सबको मिलकर है मनाने ।।।



भारत के पर्व





समृद्धि कुतूहलम्
ONE EARTH • ONE FAMILY • ONE FUTURE



लोकसभा
Dedicated to Truth in Public Interest

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

भाई भाई



प्रकाश राणा
लेखापरीक्षक

रिश्ते बनते बिगड़ते रहेंगे,
मगर भाई का प्रेम न तोड़ो।
कस्ती डूब जाए कहीं किनारे पर,
भाई का साथ न छोड़ो।।
जन बढ़ेंगे, प्यार बटेगा,
एक साथ रहने पर वार भी रहेगा,
पर मत भूलो,
हालत बिगड़ेगे तो आपका थामने वाला हाथ
भाई का ही रहेगा।।
समय तो करवट लेती है
पर तुम ना करवट लेना
बचपन में जैसे बड़े भाई ने
उंगली पकड़कर साथ निभाया,
उनकी मुश्किलों में तुम भी हाथ बटाना।।
शिकवे शिकायत अगर हुए भी तो,
दो चार से ना मिलना
आपस की बात, आपस में ही करना
वेशक! ये चल अचल सम्पत्ति ही
मनमुटाव का कारण है
मगर रिश्तों को निभाने में किश्तों को न लाना
बड़े भाई पिता के समरूप है
छोटी मोटी भूल को भूल ही रहने देना।
गैरों की बातों को धूल ही रहने देना
छोटे हो अगर तुम
तो छोटा बनके रहना
कलयुग का हवाला देकर, भाई से मुंह मोड़ ना लेना
भाई से बड़ा प्रेम ना कोई दूजा होगा
इत्र वाले मित्र तो कई मिलेंगे
पर भाई जैसा यार ना मिलेगा,
भ्रातृत्व का प्यार ना मिलेगा।।



देवराहा बाबा



सुधीर कुमार सिंह
वरिष्ठ अनुवादक

पूर्वांचल के क्षेत्र में जनमानस के हृदय में बसे हैं दो प्रमुख संत बाबा गोरखनाथ और देवराहा बाबा। गोरखपुर क्षेत्र में बाबा गोरखनाथ का प्रभाव देखा जा सकता है उन्हीं के नाम पर गोरखपुर शहर का नाम पड़ा है और देवराहा बाबा के नाम पर मेरे गृह जनपद देवरिया का नाम पड़ा है। भारत में योग की परंपरा बहुत प्राचीन है और इसके कई प्रकार हैं। सिद्ध योग क्रिया से कोई ठंड में निर्वस्त्र रहता है, कोई केवल टाट पहन कर रहता है, कोई 15-20 सालों तक एक पैर पर खड़े रहता है, कोई सालों मौन रहता है, कोई हिमाचल की चोटी पर रहता है तो कोई लंबी आयु तक जीवित रहता है। पुराणों में भी साधु-संतों के सिद्धयोग का वर्णन मिलता है। कई योगी तो ऐसे हुए जिनकी भक्ति और सिद्धियों के सामने ईश्वर भी नतमस्तक हो गए।

बहुत ही कम समय में देवराहा बाबा अपने कर्म एवं व्यक्तित्व से एक सिद्ध महापुरुष के रूप में प्रसिद्ध हो गए। बाबा के दर्शन के लिए प्रतिदिन विशाल जन समूह उमड़ने लगा तथा बाबा के सानिध्य में शान्ति और आनन्द पाने लगा। बाबा श्रद्धालुओं को योग और साधना के साथ-साथ ज्ञान की बातें बताने लगे। बाबा का जीवन सादा और एकदम संन्यासी था। बाबा भोर में ही स्नान आदि से निवृत्त होकर ईश्वर ध्यान में लीन हो जाते थे और मचान पर आसीन होकर श्रद्धालुओं को दर्शन देते और ज्ञानलाभ कराते थे। कुंभ मेले के दौरान बाबा अलग-अलग जगहों पर प्रवास किया करते थे। गंगा-यमुना के तट पर उनका मंच लगता था। वह एक-एक महीने दोनों के किनारे रहते थे। जमीन से कई फीट ऊंचे स्थान पर बैठकर वह लोगों को आशीर्वाद दिया करते थे। बाबा सभी के मन की बातें जान लेते थे। उन्होंने पूरे जीवन कुछ नहीं खाया। सिर्फ दूध और शहद पीकर जीते थे। श्रीफल का रस उन्हें बहुत पसंद था। बाबा कभी क्रोधित नहीं होते थे।

श्रद्धालुओं के कथनानुसार बाबा अपने पास आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से बड़े प्रेम से मिलते थे और सबको कुछ न कुछ प्रसाद अवश्य देते थे। प्रसाद देने के लिए बाबा अपना हाथ ऐसे ही मचान के खाली भाग में रखते थे और उनके हाथ में फल, मेवे या कुछ अन्य खाद्य पदार्थ आ जाते थे जबकि मचान पर ऐसी कोई भी वस्तु नहीं रहती थी। श्रद्धालुओं को कौतुहल होता था कि आखिर यह प्रसाद बाबा के हाथ में कहीं से और कैसे आता है। जनश्रुति के मुताबिक, वह खंचरी मुद्रा की वजह से आवागमन से कहीं भी कभी भी चले जाते थे। उनके आस-पास उगने वाले बबूल के पेड़ों में कांटे नहीं होते थे। चारों तरफ सुंगंध ही सुंगंध होता था।

लोगों में विश्वास है कि बाबा जल पर चलते भी थे और अपने किसी भी गंतव्य स्थान पर जाने के लिए उन्होंने कभी भी सवारी नहीं की और ना ही उन्हें कभी किसी सवारी से कहीं जाते हुए देखा गया। बाबा हर साल कुंभ के समय प्रयाग आते थे। मार्कण्डेय सिंह के मुताबिक, वह किसी महिला के गर्भ से नहीं बल्कि पानी से अवतरित हुए थे। यमुना के किनारे वृन्दावन में वह 30 मिनट तक पानी में बिना सांस लिए रह सकते थे। उनको जानवरों की भाषा समझ में आती थी। खतरनाक जंगली जानवरों को वह पल भर में काबू कर लेते थे।

उन्होंने भारत में कई स्थानों का दौरा किया और विभिन्न राज्यों में अलग-अलग नामों से जाने जाते थे। गंजम (ओडिशा) में पूर्णेश्वरी मां तारा तारिणी शक्ति पीठ में, स्थानीय लोगों ने उन्हें चमत्कारी बाबा के नाम से संबोधित किया करते थे। आज भी मां तारा तारिणी शक्ति पीठ के पुजारी मां के पीठ को यात्रा के दौरान बाबा के चमत्कारों को याद करते हैं। एक बार आकाशवाणी के साथ एक साक्षात्कार में देवराहा बाबा ने भी इसकी पुष्टि की थी।



वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसत्तायं सार्वान्यथा
Dedicated to Truth in Public Interest

75
आज़ादी का
अमृत महोत्सव

लोगों का मानना है कि बाबा को सब पता रहता था कि कब, कौन, कहाँ उनके बारे में चर्चा हुई। वह अवतारी व्यक्ति थे। उनका जीवन बहुत सरल और सौम्य था। वह फोटो कैमरे और टीवी जैसी चीजों को देख अचंभित रह जाते थे। वह उनसे अपनी फोटो लेने के लिए कहते थे, लेकिन आश्चर्य की बात यह थी कि उनका फोटो नहीं बनता था।

देवराहा बाबा को योग में महारत प्राप्त थी जिसके कारण उन्हें 'महायोगी' की उपाधि दी गयी। उन्होंने 'योगासन' से समय को नियंत्रित कर लिया था। देवराहा बाबा उत्तर प्रदेश के सिद्ध महायोगी थे। देवराहा बाबा को कई तरह की सिद्धियाँ प्राप्त थी। कहा जाता है कि बाबा धरती ही नहीं बल्कि पानी पर भी चलते थे और व्यक्ति को देख उसकी मन की बात पढ़ लेते थे। बाबा में जानवरों के मन की बातों को समझने की भी अद्भुत शक्ति थी। देश-विदेश से लेकर बड़ी-बड़ी हस्तियाँ और राजनेता बाबा से मिलने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए लालायित रहती थीं। सरयू नदी के किनारे मईल गांव स्थित (देवरिया) अपने आश्रम में देवराहा बाबा भक्तों को दर्शन दिया करते थे। देवराहा बाबा अपने चमत्कारों के साथ ही लंबी आयु के लिए भी जाने जाते हैं।

बाबा देवराहा भक्तों को कष्टों से मुक्ति के लिए के मंत्र देते थे। लेकिन इसके अलावा बाबा गोसेवा और जनसेवा को भी सर्वोपरि मानते थे। बाबा ने अपने भक्तों को गरीबों, असहाय व जरूरतमंदों की सेवा, को प्रेरित करते थे।

कहा जाता है कि बाबा ने जीवन में कभी अन्न नहीं खाया। वे केवल दूध, शहद और फलाहार लिया करते थे। बाबा के जन्म की तारीख तो अज्ञात है, जिस कारण उनके उम्र का सही आंकलन नहीं किया जा सकता। लेकिन बाबा ने अंतिम सांस 19 जून 1990 को ली थी। यह योगिनी एकादशी का दिन जो कि मोक्ष दिलाने वाला दिन होता है।



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

देवरहा बाबा

द्विभाषी वाक्यांश/शब्दावली

Entry, Adjusting	समायोजक प्रविष्टि
Entry, Closing	संवरण प्रविष्टि
Entry, Contra	प्रति प्रविष्टि
Entry, Correcting	शोधक प्रविष्टि
Entry, Credit	क्रेडिट/जमा प्रविष्टि
Entry, Debit	डेबिट/जमा प्रविष्टि
Entry, Double	दोहरी प्रविष्टि
Entry, Journal	जनरल प्रविष्टि
Entry, Ledger	खाता प्रविष्टि
Entry, Opening	प्रारम्भिक प्रविष्टि
Entry, Original	मूल प्रविष्टि
Entry, Rectifying	त्रुटि निवारक प्रविष्टि
Entry System, Single	एकहरी प्रविष्टि प्रणाली/इकहरी खतान प्रणाली
Entry, Transfer	अंतरण प्रविष्टि
Equalisation	समकरण
Internal Organisation	आंतरिक संगठन
Internal reserve	आंतरिक आरक्षित निधि
International Agreement	अंतर्राष्ट्रीय करार
Interruption of Duty	इयूटी में व्यवधान
Intestate	बिना वसीयत, निर्वसीयती, निर्वसीयत
Introductory	विषय प्रवेश, प्रस्तावना, भूमिका
Intuitive pricing	अनुमानिक कीमत-निर्धारण
Invariably	निरपवाद रूप से/सदा
Inverse proportion	प्रतिस्त्रोम अनुपात
Investigation	जांच पड़ताल, अन्वेषण
Investment	निवेश
Investment committee	निवेश समिति
Investment ledger	निवेश खाता
Invitation of tender	टेंडर मांगना, निविदा-आमंत्रण
Invoice	बीजक
Jetsam	फेंका माल/प्रक्षिप्त माल
Jetty	जेटी/घाट
Jewellery	आभूषण

Job Card	जाब कार्ड
Job cost ledger	जाब लागत खाता
Job costing sheet	जाब लागत पत्रक/शीट
Job lot	बिंबिध माल
Job work	फुटकर काम/छुटपुट काम/जाब कार्य
Jobbing shop	बहुधंधी कारखाना
Joining date	कार्यग्रहण तिथि
Joining period	कार्यग्रहण अवधि
Joining report	कार्यग्रहण रिपोर्ट
Joining time	कार्यग्रहण अवधि
Joining time pay	कार्यग्रहण अवधि वेतन
Joint account	संयुक्त लेखा
Gross Income	सकल आय
Gross Losses	सकल हानियां
Gross proceeds	सकल आगम, प्राप्तियां
Gross profit	सकल लाभ
Gross revenue	सकल राजस्व, आय
Gross sales	सकल विक्री
Gross Tonnage	सकल टनभार
Gross value	सकल मूल्य
Ground balance	प्रत्यक्ष शेष
Ground rent	जमीन भाड़ा
Group Accounts	ग्रुप/समूहित लेखे
Growth oriented Tariff Policy	संवृद्धिमुखी/संवृद्धि प्रधान टैरिफ नीति
Growth Potential	संवृद्धि संभाव्य
Growth Promoting Factors	संवृद्धिकारी कारक
Guarantee	गारंटी, आश्चस्ति
Habeas Corpus	बन्दी प्रत्यक्षीकरण
Habitual indebtedness	आभ्यासिक कर्जदारी/ऋणग्रस्तता
Half average pay	अर्ध औसल वेतन
Half holiday	आधी छुट्टी
Half Margin	हाफ मार्जिन
Half pay	अर्ध वेतन
Half Walk-outs	अनमने ग्राहक
Half and Mutilated notes	आधे और कटे-फटे नोट
Halt	पड़ाव/विराम



समृद्धि कुटुम्बकम्
THE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकराज्याय सत्यमिच्छा
Dedicated to Truth in Public Interest



श्रीमती सुस्मिता विश्वास, सहा.पर्यवेक्षक को आखिल भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग द्वारा आयोजित, फोटोग्राफी प्रतियोगिता में 'मूवी क्लिपिंग' एवं 'स्टिल' श्रेणी में प्राप्त प्रथम एवं द्वितीय पुरस्कार।

पुरस्कृत चित्र एवं प्रमाण-पत्र



कार्यालय कार्मिक का विदाई समारोह।



वसुधैव कुटुम्बकम्
ONE EARTH - ONE FAMILY - ONE FUTURE



लोकसभा सचिवालय
Dedicated to Truth in Public Interest



राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक

हिन्दी पखवाड़ा 2021-22



कार्यालय क्लब द्वारा आयोजित क्रिकेट प्रतियोगिता





सत्यमेव जयते
Dedicated to Truth in Public Interest

कहाँ से चले थे कहाँ आ गए हैं
ये मंज़र हमें आज फिर भा गए हैं
नई-सी लगी है जगह हर पुरानी
ज़रा याद रखना यहाँ की कहानी

कुँवर बेचैन

1 जुलाई 1942—29 अप्रैल 2021



डा. कुँवर बेचैन – श्रद्धांजलि

हिन्दी कविता एवं कवि सम्मेलनों के जगत में श्री कुँवर बेचैन का नाम काफी चिर-परिचित और लोकप्रिय है। उनका जन्म 1 जुलाई, 1942 को उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद ज़िले के उमरी ग्राम में हुआ था। उनका वास्तविक नाम था - डा.कुँवर बहादुर सक्सेना। उन्हें उपनाम "बेचैन" से काफी लोकप्रियता प्राप्त हुई। बेचैन जी गाज़ियाबाद के एम.एम.एच.महाविद्यालय में हिन्दी के विभागाध्यक्ष थे। समकालीन हिन्दी कविता और हिन्दी गज़ल के जगत में उनका नाम सबसे बड़े गीतकारों, कवियों और शायरों में शुमार किया जाता है। उन्हें वर्ष 2020 में काव्य और साहित्य के क्षेत्र में जीवन भर की उपलब्धि के लिए कविशाला पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें वर्ष 2017 में लंदन के हाउस ऑफ लॉर्ड्स में एक भारतीय गीतकार के रूप में भी सम्मानित किया गया था।

हिन्दी गीतों की वाचिक परंपरा के ऐसे हस्ताक्षर के जाने से आए अवकाश को अब भर पाना काफी कठिन है। कुँवर बेचैन साहब ने कई विधाओं में साहित्य सृजन किया यथा - कवितायें, गज़ल, गीत और उपन्यास। व्यवहार से सहज और वाणी से मधुर इस रचनाकार को सुनना और पढ़ना अपने आप में अनोखा अनुभव है। उनकी सारी रचनाएँ सकारात्मकता से ओत-प्रोत हैं। दिनांक 29 अप्रैल 2021 को वैश्विक महामारी कोविड 19 ने उन्हें सदा के लिए इस संसार से अलग कर दिया। उन्होंने उत्तर प्रदेश के नोवडा में अपने जीवन की अंतिम साँसे लीं। उनके निधन से हिन्दी भाषा और साहित्य जगत में शोक की लहर है।